आचार्य श्री आदचन्द्रसूरि ग्रन्थमाला पुस्तक ५६ मु

दान | जगम युगप्रधान श्री पार्श्वचंद्रसूरि सद्गुरुभ्यो नम | शील

卐 परमपूज्य आचार्यदेव श्री आर्यचद्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमो नम 卐

卐 परमपूज्य आचार्यदेव श्री सागरचंद्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमो नम 卐

श्रीमन्नागपुरीय बृहत्तपागच्छीय

(श्री पार्श्वचद्र गच्छीय)

श्री पौषधव्रत विधि

(विधियुक्त विस्तार सहित)

प्रेरक

परमपूज्य शासनमान्य आचार्यदेव श्री आर्यचद्र सूरीश्वरजी साहेबना शिष्यरत्न मुनिराज श्री प्रसादचद्रजी महाराज साहेब

प्रकाशक

मास्तर मणिलाल वाडीलाल शाह

वि० स १९९९ सन् १९५२ वीर सं २४६९

बीजी आवृत्ति अमूल्य प्रति ५००

धी वीरविजय प्रीन्टींग प्रेसमा शा केशवलाल शाकळचदे छाप्यु ठे सलापोस मोसरोड—अमदावाद

भाव | प पू तपस्वी मु म श्री जगतचद्रजी गणी सद्गुरुभ्यो नमोनम | तप

श्री परमगुरुदेव स्तुतिः

(स्रग्धरा-वृत्तम्)

श्रीमत्पार्श्वेन्दुसूरिस्सकलमुनिजनैरर्च्यपादारविन्दो ।
भक्तेभ्यस्सम्यबोधं सपदि भवगदच्छेदशक्तिं ददानः ॥
सोऽयं गच्छाधिनाथो जयति जिनमते भव्यसौभाग्यकीर्त्ति-
स्तं भक्त्या भो! पुमांसो नमत नतिगुणश्रेणिपं तत्त्वधीशम् ॥१॥

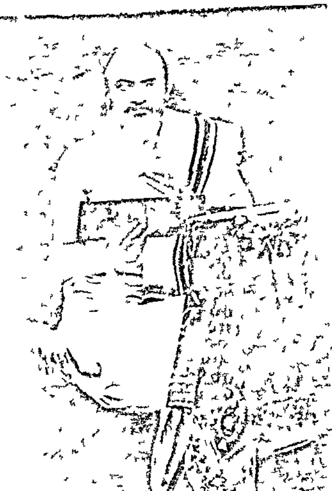
श्रीमद्विद्यावतंसा शमदमसहिता बालभावादिरक्ता ।
ज्ञानाभ्यासे प्रवृत्ता निखिलजनमनो हर्षदाः स्वैर्गुणौघैः ॥
मध्यस्था मान्यवाक्या दलितमदबला भ्रातृचन्द्राभिधाना-॥
स्तारुण्ये तीर्णमोहा निरुपमचरिताः सूरिराजा जयन्तु ॥ २ ॥

- शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् -

श्रीपार्श्वप्रभुपादपद्ममधुलिड् जातं सदा सेवया,
श्रीजैनेंद्रमुखाब्जनिस्सृतवचोवीस्तारित श्रेयसे ।
संसाराब्धिनियामकं सुरनरं देवैः सुसंपूजितं,
तं सूरिं सुखदं भजे गुरुवरं चन्द्रोत्तरं सागरम् ॥ ३ ॥

(शीखरिणीवृत्तम्)

सुरनर नृपि सेव्ये सर्वदोषैर्विमुक्ते ।
भवजलधितरौ हि साधुभृद्गैः प्रयुक्ते ॥
तव चरणसरोजे कोटिशो मे प्रणामः ।
हृदि वसतु गणिन् मे श्रीजगच्चन्द्रदेव! ॥४॥



श्रीमन्नागपुरीयबृहत्तपागच्छाधिराजश्रीभ्रातृचन्द्रसूरिसद्गुरुभ्यो नमः ।

प्रस्तावना

मुन विवेकी वाचको प्रति—अखंड कल्याणनी परंपराने आपनार श्री वीरप्रभुना शासनने पामीने भव्य आमाओए शु करवु जोइए ते खास विचारवानी जरूरत छे अखंड सुख ज्यारे मळे के ज्यारे श्री वीतराग-प्रणीत उत्तम सर्व विरति रूप साधन जाव पामे ते सिवाय सुख मळवु मुश्केल छे ते न बनी शके तो देशविरति रूप जे बार व्रतो ते माहलु अगियारमु पौषध व्रत अवश्य करवु जोइए, जेमा जीव संसारिक सर्व उपाधिआथी शांतिने पाम छे, तेमज "समणो इव सावओ" ए उपमाने पण लायक बने छे माटे अगियारमु जे पौषधव्रत तेने आत्महितचिंतक भव्यात्माओए अवश्य करवु जोइए पोषध जेना चार प्रकार छे

१ आहार पौषध २ शरीर सत्कार पौषध ३ ब्रह्मचर्य पौषध ४ अव्यापार पौषध

आ प्रमाणे चार प्रकारे पौषध थाय छे तो आ उत्तम व्रत जीवो केम प्रेमपूर्वक सहेलाइथी करी शके ने लाभ मेळवी शके ए इरादाथी तेमज शा लालभाइ जोइतारामनी खास प्रेरणा थवाथी आ पुस्तक विस्तारथी विधियुक्त छपाववामा आवेल छे माटे, आ व्रतनु आठम-चौदस-सवच्छरी-चोमासी वगेरे पर्वतिथीओमां अवश्य आराधना करवी जोइए. वळी कवच अने संबल नामना बे वृषभो तीर्यंच होवा छता पण भावथी आ व्रतनी आचरणा करता हता तो भवभीरु आत्माए आर्य-देश, उत्तम कुल, अने श्रावक धर्मनी सामग्री पामीने अवश्य प्रवृत्ति करवी

सामळानी पोळ
अमदावाद
संवत् १९९९
पोष शु ११

ली प पू आ श्री सागरचंद्रसूरिशिष्य—
मुनि ऋद्धिचन्द्रजी,

निवेदन

आ पुस्तक छपाववा माटे **परमपूज्य महाप्रभाविक नीकटोपकारी आचार्यदेव श्री भ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजी**ना शिष्यो आचार्य **श्री सागरचन्द्रसूरीश्वरजी** तथा प पू महा तपस्वी मुनि महाराज **श्री जगत्चन्द्रजीगणी** महाराज अने तेमना सेवाभावी शिष्यो मुनिश्री **वृद्धिचन्द्रजी** महाराज तथा मुनि **विद्याचन्द्रजी** महाराज तथा मुनि **श्री लाभचन्द्रजी** महाराजना सदुपदेशथी अमदावाद, शामळानी पोळ नीवासी शा लालभाइ जोइताराम तरफथी रु ५१) शा नेमचद फचराभाइ तरफथी रु ५०) तथा तळीयानी पोळ नीवासी सतीया केशवलाल मनसुखरामनी विधवा बाइ पोपटीबाइ तरफथी रु ५० नी द्रव्य सहाय मळी छे ते माटे तेओने धन्यवाद घटे छे

पोसह करनार भाइओ तथा बहेनो आ पुस्तकनो पूरेपूरो लाभ उठावशे एवी आशा राखवामा आवे छे

आ पुस्तक छपावता दृष्टिदोषथी या प्रेसदोषथी भूल रही गइ होय ते सुधारी वांचवानी भलामण करवामां आवे छे

धर्मक्रियाना आवा उपयोगी पुस्तकने छपाववानो उपदेश आपनार मुनिश्री **वृद्धिचन्द्रजी** महाराज तथा मुनिश्री **विद्याचन्द्रजी** महाराज तथा मुनिश्री **लाभचन्द्रजी** महाराज साहेबनो तथा प्रुफ तपासी आपनार भाइश्री **कुमुदचन्द्र गोकळदास** शाह, एम ए , एल एल बी , तथा व्याकरणतीर्थ वैयाकरणभूषण **प अमृतलाल मोहनलाल सघवीनो** आभार मानवामा आवे छे

—प्रकाशक.

ॐ श्री वीतरागाय नमः

जैनागमाम्भोनिधि-श्रीमत्पार्श्वचन्द्रसूरीश्वर-
पादपद्मेभ्यो नम ।

जैनाचार्य श्रीमद् भ्रातृचन्द्रसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नम ॥

(प्रथम आ जरुर वाचो)

पोसह करनारने जाणवा लायक अगत्यनी ॥

सूचनाओ ।

पोसह एटले शु?-धर्मनी पुष्टिने जे धारण करे (अर्थात् धर्मनी वृद्धि करे) ते पौषध श्रावकना बार व्रतो पैकीनु आ अगीयारमु व्रत छे पचमी, अष्टमी, चतुर्दशी विगेरे पर्व तिथिने दिवसे चार पहोरनो अथवा आठ पहोरनो पोसह करवामा आवे छे ।

पौषधना मुख्य भेद चार छे'—

१ आहार पोसह-एटले-उपवास, आयबिल, नीवी एका सणु (आहार त्यागरूप) ।

२ शरीर-सत्कार एटले पोसहमा-स्नान-विलेपन विगेरेथी शरीरनी विभूषा (शोभा) सत्कार न करवो ते (अर्थात् शरीर संबधी दरेक शोभानो त्याग करवो) ते ।

३ ब्रह्मचर्य एटले पोसहमा-शियळ पालवुं (स्त्री सग त्याग) ते।

४ अव्यापार-एटले पोसहमां-सावद्य (पापरूप) व्यापार (क्रिया)नो त्याग करवो ते ।

आ चार भेदमांथी हाल (पूर्वाचार्योनी परंपराथी देशथी ने सर्वथी एम बे रीते फक्त आहार पोसह कराय छे, एटले तिविहार उपवास, आयंबिल, नीवी के एकासणु करीने पोसह करवो ते देशथी आहार पोसह अने चउविहार उपवास करीने पोसह करवो ते सर्वथी आहार पोसह ।

आ पोसह चार प्रहरनो तथा आठ प्रहरनो एम बे रीते कराय छे ।

जेने मात्र रात्रिना चार प्रहरनो पोसह करवो होय तेने पण उपवास, आयंबिल नीवी के छेवट एकासणा सुधीनो काइ पण तप करेल होवो जोइए ।

पोसह करवानी इच्छावालाए सवारे प्रतिक्रमण अवश्य करवु जोइए ।

मुख्य वृत्तिए पोसह करवानी इच्छावाळाए प्रभातमा प्रतिक्रमण करी सामायिक पार्यो विनाज पोसह उच्चरवो जोइए।

पण हाल सवारमा प्रतिक्रमण करीने पछी-जिनपूजा करीने पछी पण पोसह लेवानी प्रवृत्ति छे ।।

उपर जणाव्या प्रमाणे कदाच सवारनु प्रतिक्रमण कर्युं न होय समय थइ गयो होय ने पोसह करवानो होय तो ते प्रथम पोसह लइ, राइ पडिक्कमणु करे ते पछी पडिलेहण विगेरे क्रिया करे ।

करेमि भंतेमा ज्या जाव नियम पज्जुवासामि ' पाठ आवे छे त्यां जाव पोसह पज्जुवासामि ' कहे ।

पोसहमा जोइतां उपकरणो (चीजो)

दिवसना पोसहवाळा नीचे मुजब राखे-

१ चरवळो, २ कटासणु, ३ मुहपत्ति ४ धोतीयु ५ सूत्रनो कदोरो ६ उत्तरासण ७ कामळी ८ खेळीयु-(नाकनो के मुखथी नीकळतो मळ काढवा साद) ९ कुंडी (मात्रु करवा माटे), ।

रात्रि पोसहवाळा नीचे मुजब वधारे राखे -

१ सथारीयु, २ उत्तरपट्टो (ओछाड), ३ कुंडल (रुना पुमडा), ४ चुनो नाखेल पाणी, ५ लोटो। पछी वधारे चीजो लेवा जरुर जणाय तो याची ले ।

केटलीएक समजुती ।

१ पोसहमा आभूषण (दागीना) पहेरवा जोइए नहीं कदोरो पण सूत्रनो जोइए ।

२ मुहपत्तिना पचास बोल पोसह-विधिमा लख्या छे ते प्रमाणे मुहपत्तिनु पडिलेहण करता बोलवा पण स्त्रीओए खपाळना, हृदयना अने बे भुजाना ए दश बोल न बोलवा एटले आ (कृष्णलेश्या-नीललेश्या-कापोतलेश्या, मायाशल्य-नियाणशल्य-मिथ्यात्वशल्य क्रोध-मान-माया-लोभ,) दश विना बाकीना चालीश बोलथी मुहपत्ति पडिलेहवी ।

३ उपाश्रयनो काजो लेनारने एक आयंबिल तपनु फळ मळे छे माटे काजो बराबर उपयोग पूर्वक लेवो ।

४ पोसह लीधा पछी जिनमंदिरे दर्शन करवा अवश्य जवु जोइए ।

५ ज्यारे उपाश्रयनी बहार जाय त्यारे 'आवस्सही मत्थएण

घदामि ' कहीने नीकळे अने ज्यारे उपाश्रयमां आवे त्यारे 'निसिही मत्थएण वंदामि ' कहीने प्रवेश करे । -

६ जो चोमासु होय तो बपोरना देववंदन कर्या पहेला (बीजी वारनो) काजो लेवो जोइए ।

७ कुडळ (रुना पुमडा) गुमावे तो आलोयण आवे ।

८ पडिलेहण उभडक (उभा) पगे बेसीने मौनपणे जयणायुक्त करे. जीवजंतु बराबर तपासे अने ते बचते उत्तरासण राखे नहीं ।

९ पोसहमा रहेता पोसहना पाच अतिचार तथा सामायिकना बत्रीश दोष टाळवानो प्रयत्न करे ।

---

१ माथे कामळी नाखवानो काळ ।

चोमासामा-पहले आषाढ वदि १ थी कार्तिक शुदि १५ सुधी सवारे छ [1]घडी (बे कलाक अने चोवीश मीनीट) दिवस (सूर्य) चढे त्या सुधी कामळी माथे ओढे अने साजे छ घडी दिवस बाकी रहे त्यारथी ओढे ।

शियाळामा-कार्तिक वदि १ थी फागण शुदि १५ सुधी सवारे ने साजे चार चार [2]घडी सुधी ।

उनाळामा-फागण वदि १ थी आषाढ शुदि १५ सुधी सवारे ने साजे बे बे [3]घडी सुधी ।

---

१ चोवीश मीनीटनी एक घडी समजवी । २ दोढ कलाक ने छ मीनीट । ३ अडतालीश मीनीट ।

२ अचित्त (उन्हा) पाणीनो काळ ।

चोमासामा--आषाढ वदि १ थी कार्तिक शुदि १५ सुधी जेने त्रण उकाळा आवेल होय तेवा पाणीनो काळ चुलेथी उतार्युं त्यारथी त्रण प्रहरनो काळ पडले ते त्रण पहोर सुधी अचित्त रहे पछी सचित्त थइ जाय।

शियाळामा--कार्तिक वदि १ थी फागण शुदि १५ सुधी चार प्रहरनो काळ।

उन्हाळामां--फागण वदि १ थी अषाढ शुदि १५ सुधी पाच प्रहरनो काळ ।

उपर प्रमाणे कहेल काळ पछी ए अचित्त पाणी पाछु सचित्त थाय छे माटे पोसहमा याचीने लीधेल पाणी ते ते ऋतुना कहेल काळ उपरात रहेवा देवु नहीं।

काळ पूर्ण थता पहेला तेमा कलीचुनो (छाशनी आस जेवो रग थाय तेटलो) नाखवो पछी ते पीवाना उपयोगमा लेवाय नहीं पण बीजा वापरवाना काममा लइ शकाय।

काल पूर्ण थया पहेलां चुनो नाखवो भूली जवाय ने कहेल काळ व्यतीत थइ जाय तो दश उपवासनी आलोयण आवे माटे बहु उपयोग राखवो ।

३ मात्रु (पेशाब) करवा जवा-विधि ।

मात्रुं करवा जनारने प्रथम तो (मात्रु करवा जवुं पडे माटे) कुडी पुजणी अने अचित्त पाणी याची राखे ।

पछी ज्यारे मात्रु करवा जवु होय त्यारे मातरीयु वस्त्र पहेरी, कामळीना काळनो वखत होय तो माथे कामळी अथवा कटासणुं नाखी चरवळो काखमा राखी मुहपत्ति केडे खोसी, पुंजणीथी कुडी प्रमार्जी, तेमां मात्रु करी परठववा योग्य भूमि

जोइ, 'अणुजाणह जस्सवग्गहो' कही मात्रु परठवे, परठवीने त्रण वखत 'वोसिरे' कहे पछी कुंडी धोइने मूळ जग्याए मूकी, अचित्त पाणीथी हाथ धोइ (कदाच पग अपवित्र थया होय तो ते पण शुद्ध करी), वस्त्र वदली-स्थापनाचार्य-सन्मुख आवी, खमासमण दइने इरियावही पडिकमे।

४ स्थंडिल जवा-विधि।

पोसहमा कदाच स्थंडिल जवु पडे तो (मात्रु करवा जवा-विधिमा बतावेल छे ते प्रमाणे तयार थइ) शुद्ध सहा राखनी रजा लइ, 'आवस्सही मत्थएण वंदामि' कही, लोटो लइने जाय त्या जग्या बरावर जंतु रहित तपासी अणुजाणह जस्सवग्गहो कही बाधा टाळे पछी उठता 'वोसिरे' त्रण वखत कहीने उपाश्रये आवे त्यारे 'निसिही' मत्थएण वंदामि कहीने पछी हाथ पग प्रक्षाल्न करी, वस्त्र वदली-स्थापनाचार्य-सन्मुख आवी, खमासमण देइन इरियावही पडिकमे।

५ रात्रि पोसह-विधि।

जेणे सवारे पोसह दिवसनोज लीधेल छे तेनोज विचार रात्रि पोसह करवानो थाय तो तेणे साजनी पडिलेहणा कर्या पहेला इरियावही पडिकमि करी पोसह लइ वहुवेल्नो आदेश मागी पछी पडिलेहण विगेरे क्रिया करे।

तथा जेणे सवारे पोसह लीधो नथी अने फक्त रात्रि नोज पोसह करवो छे तेने पण पडिलेहण, देववंदन विगेरे क्रिया दिवस छता करवानी होवाथी पोसह लेवा वेळासर आववु जोइए अने ते दिवसे तेने छेवटमा तपमा एकासणु होवु जोइए पछी ते पण पोसह लइ पडिलेहण विगेरे करे।

ॐ अर्हं नम ।

अथ पोसह विधि ।

पोसह करनार श्रावक आभूषण-अलकारनो त्याग करे पछी पहेला जणावेली वस्तुमांथी शुद्ध धोतीयु पहेरी, चरवलो मुहपत्ति हाथमा लइ, चरवळाथी भूमि प्रमार्जी, स्थापनाचा र्यजी-सन्मुख कटासणु पाथरी, प्रथम राइप्रतिक्रमण विधि पूर्वक करी, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु वादी, पछी पोसह ले ।

अथ पोसह लेवा-विधि ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वदामि ॥

कही, उभा थइ, मुख आगळ मुहपत्ति राखी, बे हाथ जोडी, इरियावही पडिकमे ते नीचे प्रमाणे

इरियावही ।

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! इरियावहिय पडिक्कमामि ? इच्छ इच्छामि पडिक्कमिउ, इरियावहिआए, विराहणाए, गम-

णागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग दग-मट्टी-मक्कडा-संताणा-संकमणे जे मे जीवा विराहिआ, एगिंदिआ, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि-दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरी ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ।

अन्नत्थ उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

आटलुं बोली एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, पछी नमो अरिहंताणं कही प्रगट लोगस्स कहे ते आ रीते—

लोगस्स।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म-तित्थयरे जिणे अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ [१]उसभ- [२]मजियं च वंदे, [३]संभव-[४]मभिणंदणं च [५]सुमइं च। [६]पउमप्पहं [७]सुपासं, जिणं च [८]चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ [९]सुविहिं च पुप्फदंतं, [१०]सीयल-[११]सिज्जंस-[१२]वासुपुज्जं च। [१३]विमल-[१४]मणंतं च जिणं [१५]धम्मं [१६]संतिं च वंदामि ॥३॥ [१७]कुंथुं [१८]अरं च [१९]मल्लिं, वंदे [२०]मुणिसुव्वयं [२१]नमिजिणं च। वंदामि [२२]रिट्ठनेमिं, [२३]पासं तह [२४]वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीण-जरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवर-मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

पछी खमासमण दइ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पोसह लेवामुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं पछी उभडक पगे बेसीने पचास बोल सहित मुहपत्ति पडिलेहवी

मुहपत्तिना ५० बोल।

१ सम्यक्त्वमूल-निर्मलदृष्टिए-जीव जोइ-जयणाकरुं (दृष्टि पडिलेहणा)

३ सम्यक्त्वमोहनीय-मिश्रमोहनीय-मिथ्यात्वमोहनीय-परिहरुं।

३ कामराग-स्नेहराग-दृष्टिराग परिहरुं।

(आ छ बोल मुहपत्ति फेरवता बोलवा)

३ सुदेव-सुगुरु-सुधर्म-आदरु।

३ कुदेव-कुगुरु-कुधर्म-परिहरु।

३ ज्ञान-दर्शन-चारित्र-आदरु

३ ज्ञानविराधना - दर्शनविराधना - चारित्रविराधना-परिहरु।

३ मनोगुप्ति-वचनगुप्ति-कायगुप्ति-आदरु।

३ मनोदंड-वचनदंड-कायदंड-परिहरु।

(आ अढार बोल डावा हाथनी हथेळीमा बोल्वा)
उपर कह्या ते पचीश बोल मुहपत्ति पडिलेहवाना छे अने आ नीचेना पचीश बोल शरीर पडिलेहवाना छे

३ हास्य-रति-अरति-परिहरु (डाबे हाथे।

३ भय-शोक-दुगन्छा-परिहरु (जमणे हाथे)।

३ कृष्णलेश्या-नीललेश्या-कापोतलेश्या-परिहरु (मस्तके)।

३ ऋद्धिगारव-रसगारव-सातागारव-परिहरु (मुखे)।

३ मायाशल्य-नियाणशल्य - मिथ्यात्वशल्य - परिहरु (हृदये)।

२ क्रोध-मान-परिहरु-(डावी भुजा पाछळ)।

२ माया-लोभ-परिहरु (जमणी भुजा पाछळ)।

६ पृथ्वीकाय-अप्काय-तेउकाय-वाउकाय - वनस्पतिकाय-त्रसकाय-विराधना-परिहरु (पगे)।

पछी खमासमण दइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पोसह संदिसाउ? इच्छ बीजे खमासमणे इच्छाकारेण० पोसह ठाउं? इच्छ कही उभा थइ, बे हाथ जोडी एक नवकार गणे

नवकार।

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच नमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं।

पछी इच्छकारी भगवन् पसाय करी पोसह दंडक उच्चरावोजी? कहे त्यार गुरु अथवा वडिल [1]श्रावक पोसहनो करेमिभंते उच्चरावे अने तेओना अभावे पोते पोसह दंडक उच्चरे ते आ प्रमाणे —

पोसह-पच्चख्खाण।

करेमि भंते पोसहं, आहार-पोसहं देसओ सव्वओ वा। सरीर-सक्कार-पोसहं सव्वओ। अव्वावार-पोसहं सव्वओ। बंमचेर-पोसहं सव्वओ। चउव्विहे पोसहे ठामि। जाव दिवस[2] अहोरत्तं वा पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं,

---

१ जेणे आपणा पहेला पोसह लीघेल होय ते वडिल कहेवाय।

२ दिवस ने रात्रिनो एटले आठ पहोरनो साथे अगर पछी लेवो होय तो 'जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि' कहे रात्रिनोज करवो होय तो 'जाव सेसं दिवसं रत्तं पज्जु०' कहे अने दिवसनो लेवो होय तो 'जाव दिवसं पज्जु०' कहे।

वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।

पछी खमासमण दइ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाउं ? बीजे खमासमणे इच्छाकारेण० सामायिक ठाउं ? इच्छ कही, उभा थइ बे हाथ जोडी, मुख आगळ मुहपत्ति राखी, एक नवकार गणी इच्छकारी भगवन् पसायकरी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ? कहे पछी पोसहनी माफक गुरु अथवा पोते सामायिक दंडक उच्चरे ते आ रीते —

सामायिक लेवानु पच्चख्खाण ।

करेमि भंते ! सामाइयं सावज्ज जोगं पच्चक्खामि जाव पोसहं पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।

पछी खमासमण दइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बहुवेल संदिसाहुं? बीजे खमासमणे इच्छाकारेण० बहुवेल [1]करेमि ? इच्छं ।

पछी पोसहवाळाने 'सवारनी पडिलेहणा विधि अने सांजनी पडिलेहणा विधि थी पडिलेहण करवुं । इति ।

---

१ आ आदेश मागवानो हेतु-वारवार नानी मोटी दरेक क्रियामा के प्रवृत्तिमां गुरुनो आदेश मागवानु अशक्य होवाथी बहु वखतनो आदेश भेगो मागी लेवो ए छे

अथ सवारनी पडिलेहणा-विधि ।

खमासमण दई इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पडिलेहण संदिसावमि ? बीजे खमासमणे इच्छाकारेण० पडिलेहण करेमि ? इच्छं पछी १ मुहपत्ति २ चरवळो, ३ कटासणु पडिलेहे। पछी खमासमण दई, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अंग-पडिलेहण संदिसावमि ? बीजे खमासमणे इच्छाकारेण० अंग-पडिलेहण करेमि ? इच्छं कही १ धोतीयु २ सूत्रनो कदोरो, ३ उत्तरासण पडिलेहे । पछी खमासमण दई, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पडिलेहणा पडिलेहावोजी ? एम कही स्थापनाचार्यनी वैयावच्च करे[1] अथवा स्थापनाचार्यने बदले वडीलनु एक वस्त्र पडिलेहे। पछी खमासमण दई इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि-पडिलेहण संदिसावमि ? बीजे खमासमणे इच्छाकारेण० उपधि पडिलेहण करेमि ? इच्छं कही बाकी रहेल सर्व वस्त्र (उपकरण)पडिलेहे। पछी खमासमण दई, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पोसहसाला पमज्जेमि ? इच्छं कही डंडासण लई तेनु पडिलेहण करी, काजो ले ए काजानी अंदर जीवजंतु बराबर तपासी जयणाथी काजाने सुपडीमा लई शुद्ध भूमिका जोई 'अणुजाणह जस्सवग्गहो' कही परठवे परठवीने 'वोसिरे' त्रणवार कहे । इति।

---

१ आ आदेश स्थापनाचार्य पडिलेहवानो छे गुरुमहाराज होय तो पोते पडिलेहे अने गुरुने अभावे श्रावक पडिलेहे ए माटे छे।

पछी स्थापनाजी पासे आवीने सज्झाय करे तेनो विधि आ रीतेः—

अथ सज्झाय करवा-विधि ।

खमासमण दइ, इरियावहि, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ कही एक लोगस्सनो अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कहे पछी खमासमण दइ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणे संदिसावमि ? बीजे खमास मणे इच्छाकारेण० बेसणे ठावमि ? त्रीजे खमासमणे इच्छाकारेण० सज्झाय संदिसावमि ? चोथे खमासमणे इच्छाकारेण० सज्झाय करेमि ? इच्छं पछी एक नवकार गणी सज्झाय कहे

अरह देवो सज्झाय[1] ।

अरह देवो गुरुणो, सुसाहुणो जिणमय महपमाण । इच्चाइ सुहो भावो, सम्मत्त बिंति जगगुरुणो ॥ १ ॥ लब्भइ सुरसा मित्त, लब्भइ पहुअत्तण न संदेहो । एग नवरि न लब्भइ, दुल्लह रयण च सम्मत्त ॥ २ ॥ सम्मत्तम्मि उ लद्धे, विमाणवज्ज न बधए आउ । जइवि न सम्मत्त जढो, अहव न बद्धाउओ पुव्वि ॥ ३ ॥ दिवसे दिवसे लक्ख, देइ सुवन्नस्स खंडिय एगो । एगो पुण सामाइय, करेइ न पहुप्पए तस्स ॥ ४ ॥ निंद-पससासु समो, समो अ माणाऽवमाणकारीसु । सम-सयण-परिअण-मणो, सामाइय-संगओ जीवो ॥ ५ ॥

---

[1] आनी प्रवृत्ति उभडक पगे बेसवानी पण छे अने चैत्यवंदननी पेठे योग मुद्राए बेसवानी पण छे ।

पछी वांदणा दे ते आ रीतेः—

गुरु वांदणा[1] ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-
याए अणुजाणह मे मिउग्गह निसीहि अहो-काय काय-
संफास खमणिज्जो भे किलामो अप्प-किलंताण बहु सुभेण
भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्ज च भे ? खामेमि
खमासमणो ! देवसिय वइक्कम आवसिआए पडिक्कमामि
खमासमणाण देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि
मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए
माणाए मायाए लोहाए सव्वकालियाए सव्व-मिच्छोवयाराए
सव्व-धम्माइ-क्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ
तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं
वोसिरामि ।

उपर मुजब बे वांदणा दइ, पछी अभुट्ठिओ खमावे

अब्भुट्ठिओ[2] ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अभिंतर-
देवसिय खामेउं ? इच्छं खामेमि देवसिय

(पछी अमणो हाथ जमीन उपर, गुरुपगे अगर चरवला उपर स्थापी) (मूकी)

---

[1] १ आ वांदणाना पाठमा ज्या 'दिवसो वइक्कंतो देवसिय, वा देवसिआए' पाठ छे ते ठेकाणे सवारमा 'राइ वइक्कंता राइय राइआए' एम अनुक्रमे पाठ कहे ।

[2] २ अभुट्ठिआमा पण 'देवसिय 'ना ठेकाणे 'राइय ' कहे ।

जंकिंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेया वच्चे, आलावे, सलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतर-भासाए, उवरि-भासाए, जंकिंचि मज्ज विणय-परिहीण सुहुमं वा, बायरं वा, तुब्भे जाणह, अहं न याणामि, तस्स मिच्छामि-दुक्कडं ॥

पछी इच्छकारी भगवन् पसायकरी पच्चक्खाण करा वोजी ? कही पच्चक्खाण करे । इति ।

पछी विस्तार पूर्वक चैत्यवंदनथी देववांदे तेनी विधि आ प्रमाणे —

अथ सवारनी देववंदन विधि ।

प्रथम खमासमण दइ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि ? एम कही इरियावही तस्स उत्तरी अन्नत्थ कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कहे । पछी उत्तरासण करी, खमासमण दइ इच्छाकारेण संदि सह भगवन् चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही नीचे बेसी डाबो ढींचण उंचो राखी बे हाथ जोडी नीचे प्रमाणे चैत्यवंदन बोले —

सिरि-रिसह-चैत्यवंदन्

सिरि-रिसह-पउमनाहं, निव मुणिं जिणवरं च तित्थ-यरं। जुगआइ-सयल-भवियण-मंगल-जय-कारगं वंदे ॥१॥ सयल-जीयलोय-पयडं, संतिकरं संतिनाह-मुणिपवरं । सोलसमं तित्थयरं, पंचम-चक्किं नमसामि ॥ २ ॥ आजीवं-बंभयारिं, निय-जस-पसरेण रंजियं भुवणं । मोडिय-वम्मह-माणं, नेमिजिणं वं पणिवयामि ॥ ३ ॥ सुर-असुर-नाग-

महिय, लोगा-ऽलोग-पयासग सूर । मिच्छत्त-तमो-हरण, पास-जिणंद थुणिस्सामि ॥ ४ ॥ तित्थपइ सिरि-वीर, गुणागर खंति-सागर धीर । पत्त भवोद-तीर, वंदे कम्मारि-सिरि-सिर ॥ ५ ॥ सव्वेऽवि य जिणनाहा, गणहर-सहिया य केवल-दिणंदा । अन्नेऽवि जे य सिद्धा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ ६ ॥ संपइ वट्टइ जे जिण, सीमंधरसामी-पमुह ते सव्वे । भविय-पडिबोह-दिणयर, तिगरण-सुद्धेण पणमामि॥७॥

पछी उभा थइ थुइ (स्तुति) कहे ते आ प्रमाणे—

गुनह गंभीर अचल जिम धीर कर्म-रिपु-वीर भवजल-तारी, वसी गृहवास तजी उदास भजी वनवास भए अनगारी । मनमथ मान मोरी कर ध्यान पाय शुभ ग्यान बहुत सुखकारी, समर अरिहंत भजित भगवंत मुक्तिवर कंत वृषभ पदधारी ॥ १ ॥ अजित जिनराय सुरासुरपाय नमत बहु भाय गुणाकर जाणी, सुधाकर दृष्टि करत सुख सृष्टि सदा समदृष्टि कहत मुखवानी । सुनत सतोष करत धर्म पोष हरत मन रोष धरत जे प्राणी, समर-सिंघ देव कहु तमु सेव जोर कर नेव भाव मन आणी ॥ २ ॥ समर जगदीश नमु निशदिश भक्ति सुजगीश मुक्ति-पथ गामी, मान मातंग दमी उत्तंग भये निरभंग मिथ्या-मत-नामी । सफल मुझ नयन देखी मुख वयन अमितवमयन रूपसम पामी, पर तुम चरण छोर जरा मरण मन भय हरण करहु मोरा स्वामी ॥ ३ ॥

अभिनदननाथ परम सुख साथ जोर दोउ हाथ रगचित्त लखु,
वारजिउ भाय पासफुनि-आय कहत निर्माय भाग्यवसी पाषु।
रसन मुह एक बहुरन विवेक तुम गुन छेक वेम हु गाउ,
भ्रमण कउमूर कर्म उनमूर रहे प्रभु दूर भावधर ध्याउ ॥४॥

पञ्जी–जकिंचि ।

जकिंचि नाम तित्थ, सग्गे पायालि तिरियलोअम्मि ।
जाइ जिण-बिंबाइ, ताइ सव्वाइ वदामि ॥ १ ॥

नमुत्थुण

नमुत्थुण अरिहंताण भगवताण ॥१॥आइगराण तित्थयराण सयसबुद्धाण॥२॥ पुरिसुत्तमाण पुरिस–सीहाण पुरिसवरपुडरीयाण पुरिस–वर–गंध–हत्थीण ॥३॥ लोगुत्तमाण लोग–नाहाण लोग–हियाण लोग–पईवाण लोग–पज्जोअगराण ॥४॥ अभय–दयाण चक्खु–दयाण मग्ग–दयाण सरण–दयाण जीव–दयाण बोहि–दयाण॥५॥धम्म–दयाण धम्म देसियाण धम्म नायगाण धम्म–सारहीण धम्मवर–चाउरत चक्कवट्टीण॥६॥दीवो–ताण सरण–गइ–पइट्ठा अप्पटिहय–वरनाण–दसण धराण वियट्ट–छउमाण ॥७॥ जिणाण जावयाण तिन्नाण तारयाण बुद्धाण बोहयाण मुत्ताण मोअगाण ॥ ८ ॥ सव्वन्नूण सव्व–दरिसीण सिव–मयल–मरुअ–मणत–मक्खय–मव्वाबाह मपुणरावित्ति–सिद्धिगइ–नाम–धेय ठाण सपत्ताण नमो जिणाण जिअभयाण जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्सतिऽणागए काले । सपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वदामि ॥ १० ॥

पछी चारित्राचार विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्ग कही उभा थइ बे हाथ जोडी, अन्नत्थ कहे, ते आ रीते —

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि॥

आठ थोयो जे लोगस्स अथवा आठ नवकारनो काउस्सग्ग करी, पछी नमो अरिहंताणं कही प्रगट लोगस्स कहे ते आ रीते —

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म–तित्थयरे जिणे, अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ [१]उसभ– [२]मजियं च वंदे, [३]संभव–[४]मभिणंदणं च [५]सुमइं च । [६]पउमप्पहं [७]सुपासं, जिणं च [८]चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ [९]सुविहिं च पुप्फदंतं, [१०]सीयल–[११]सिज्जंस–[१२]वासुपुज्जं च । [१३]विमल–[१४]मणंतं च जिणं, [१५]धम्मं [१६]संतिं च वंदामि ॥३॥ [१७]कुंथुं [१८]अरं च [१९]मल्लिं, वंदे [२०]मुणिसुव्वयं [२१]नमिजिणं च । वंदामि [२२]रिट्ठनेमिं, [२३]पासं तह [२४]वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय–रयमला पहीण–जरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय–वंदिय–महिया, जे ए

लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभ, समाहिवर-मुत्तम दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिय पयासयरा। सागरवर-गभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए।

सव्वलोए अरिहंत-चेइआणं करेमि काउस्सग्गं वंदण-वत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहिलाभ-वत्तिआए, निरुवसग्ग-वत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धीइए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

पछी दर्शनाचार-विशुद्धि माटे एक लोगस्सनो काउस्सग्ग चंदेसु निम्मलयरा सुधी करे पछी

पुक्खरवरदी ।

पुक्खर-वरदी-वड्ढे, धायइ-संडेअ जंबूदीवे अ । भरहे-रवय-विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तम-तिमिर पडल-विद्ध-संणस्स सुरगण-नरिंदमहिअस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ-मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाइ जरा मरण-सोग-पणासणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स । को देव-दाणव-नरिंद-गणऽच्चिअस्स, धम्मस्स सार-मुवलब्भ करे पमाय ? ॥ ३ ॥ सिद्धे भो ! पयओ नमो जिणमए नंदी सया संजमे, देव-नाग-सुवन्न-किन्नर-गण सब्भूअभाव-ऽच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जग-मिणं तेलुक्क-मच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए ॥ पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहिलाभ वत्तिआए, निरुवसग्ग-वत्तिआए, सद्धाए, मेहाए धीइए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीये ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहि-

ओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेण न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

थोली ज्ञानाचार-विशुद्धि माटे एक लोगस्सनो काउस्सग्ग 'चंदेसु निम्मलयरा' सुधी करे पछी

सिद्धाणं बुद्धाणं ।

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्व-सिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणऽवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देव-देव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोऽवि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्धमाणस्स । संसार-सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जिंत-सेल-सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दो य, वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठ-निट्ठि-अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥ (पछी नीचे बेसी नमुत्थुणं कहे)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं, ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिस-सीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिस-वर गंध-हत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्त

माण लोग-नाहाण लोग-हियाण लोग-पईवाण लोग-पज्जो-अगराण ॥ ४ ॥ अभयदयाण चक्खु-दयाण मग्ग-दयाण सरण-दयाण जीव-दयाण बोहि-दयाण ॥ ५ ॥ धम्म-दयाण धम्म-देसियाण धम्म-नायगाण धम्म-सारहीण धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीण ॥ ६ ॥ दीवो-ताण सरण-गइ-पइट्ठा अप्पडिहय-वरनाण-दंसण-धराण वियट्ट-छउमाण ॥ ७ ॥ जिणाण जावयाण तिन्नाण तारयाण बुद्धाण बोहयाण मुत्ताण मोअगाण ॥ ८ ॥ सव्वन्नूण सव्व दरिसीण सिव-मयल-मरुअ-मणत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति-सिद्धिगइ-नाम-धेय ठाण सपत्ताण नमो जिणाण जिअ भयाण जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिऽणागए काले । सपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वदामि ॥ १० ॥

जावति चेइआइ, जावत केवि साहु वे गाथा ।

जावति चेइआइ, उड्ढे अ अहे अ तिरिय-लोए अ । सव्वाइ ताइ वदे, इह सतो तत्थ सताइ ॥ १ ॥ जावत केऽवि साहू, भरहे-रवय-महाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाण ॥ २ ॥

सर्वे अनता सिद्धने माहारो नमस्कार होजो ।

पछी खमासमण दई, इच्छाकारेण सदिसह भगवन् स्तवन सदिसापमि ? बीजे खमासमणे इच्छाकारेण० स्तवन

भणेमि ? इच्छं पछी पंच नवकार गणी, समेत-शिखरनुं (अथवा बीजुं) स्तवन कहे ते आ —

श्री समेतशिखर तीर्थ-स्तवन ।

शिखर समेत जुहारो भवि तुमे, शिखर समेत जुहारो । इण गिरिवरपर वीश जिनेश्वर, पाम्या शिव-सुख सारो ॥ भ० ॥ १ ॥ १अजित २संभव ३अभिनंदन४ सुमति, ५पद्म प्रभ दुःखवारो । ६सुपार्श्व ७चंद्रप्रभ ८सुविधि जिनेश्वर, ९शीतलजिन सुखकारो ॥ भ० ॥ २ ॥ १०श्रीश्रेयांस ११विमल ज्यु १२अनंत जिन, १३धर्म १४शांति हैये धारो । १५श्री कुंथु १६अर १७मल्लि १८मुनिसुव्रत, १९नमि २०पार्श्वजिन तारो ॥ भ० ॥ ३ ॥ जिण जीवे गिरिराज न फरस्यो, भमशे ते संसारो । मन वच काया शुद्धि करी फरसे, ते पामे भव पारो ॥ भ० ॥ ४ ॥ संवत अढारसें छाशठे, फागण मास मोझारो । वदि पडवा दिन शिखर जुहार्यो, श्रीलब्धिचंद्रसूरि सारो ॥ भ० ॥ ५ ॥

पछी बे हाथ उंचा ल्लाटे राखी, जय वीयराय कहे

जय वीयराय ! जगगुरु !, होउ मम तुह पभावओ भयवं ! भव-निव्वेओ मग्गा-ऽणुसारिया इट्ठ-फल-सिद्धी ॥ १ ॥ लोग-विरुद्ध-च्चाओ, गुरु-जण-पूआ परत्थ-करणं च । सुह-गुरु-जोगो तव्वयण -सेवणा आभव-मखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइवि नियाण-बंधणं वीयराय ! तुह समए

तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥ दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहि-मरणं च बोहि-लाभो अ । संपज्जउ मह एअं, तुह नाह ! पणाम-करणेण ॥ ४ ॥ सर्व-मंगल-मांगल्य, सर्व-कल्याण-कारणं । प्रधान सर्व-धर्माणां, जैन जयति शासन ॥ ५ ॥

पछी ज्ञानाचार – दर्शनाचार – चारित्राचार – तपाचार – वीर्याचार-ए पंचविध आचारमांही ने कांई [illegible] दूषण लाग्यु होय ते सवि हु मन वचन कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ इति ॥

पछी पूर्ण-पोरसीनो समय थाय [illegible] दिवस (सूय) चड्या पछी उग्घाडा-[illegible] विधि आ रीते —

अथ उग्घाडा पोरसी मुहपत्ति-विधि ।

खमासमण दई, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उग्घाडा-पोरसी ? बीजे खमासमणे, इच्छाकारेण संदिसह पडिक्क-मामि ? एम कही इरियावही [illegible] —

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंग-पणग दग-मट्टी-मक्कडा-संताणा-संकमणे जे मे जीवा

हिआ, एगिंदिआ, बेइंदिया, ते.दिया, चउरिंदिया, पचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, सघाइया, सरट्टिया, परिया-विया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाण सकामिया जीवि-याओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि-दुक्कड ॥ तस्स उत्तरी।

तस्स उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण, विसोहीकरणेण, विसल्लीकरणेण, पावाण कम्माण निग्घायणट्ठाए, ठामि काउ-स्सग्ग ॥

॥ अन्नत्थ ॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण, खासिएण, छीएण जभाइएण, उड्डुएण, वायनिसग्गेण, भमलीए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहि-ओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहताण, भगवताण, नमुक्कारेण न पारेमि, ताव कायं, ठाणेण, मोणेण, झाणेण, अप्पाण वोसिरामि ॥

॥ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म-तित्थयरे जिणे अरिहते कित्तइस्स, चउवीसपि केवली ॥ १ ॥ उसभ-मजिय च वदे, सभव-मभिणदण च सुमइ च । पउमप्पह सुपास जिण च चदप्पह वद ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदत, सीयल-सिज्जस-वासुपुज्ज च । विमल-मणत च जिण, धम्म सतिं च वंदामि

॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभि
थुआ, विहुअ-रयमला पहीण-जरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा,
तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए
लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवर-मुत्तमं
दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

एक लोगस्सनो काउस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्स कहे । पछी खमासमण दइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उग्घाडा-पोरसी मुहपत्ति पडिलेहुं ? कही मुहपत्ति पडिलेहे । पछी जे पोसहमां भाजन (पातरां) वापरवां होय ते पाणी लाववा माटे पडिलेहे ॥ इति ॥

अथ जिनमंदिरे दर्शन करवा जवा-विधि ।

प्रथम कटासणुं डाबे खभे नांखी चरवलो डाबी काखमां अने मुहपत्ति जमणा हाथमां राखे पछी गुरुनी अथवा स्थापनाचार्यनी सन्मुख रही ' आवस्सही ' मत्थएण वंदामि कही [illegible] (साथे त्रण हाथ भूमि भाग दृष्टिथी जोतां जाय) जिन मंदिरे जाय त्यां त्रणवार ' निसिही ' कहेवा पूर्वक [illegible] द्वारमां प्रवेश करे । पछी प्रथम मूलनायकजीने सन्मुख दूरथी प्रणाम करीने त्रण प्रदक्षिणा दे, पछी [illegible] प्रवेश करी जिनदर्शन करी स्तुति [illegible] चैत्यवंदन ' करवानी भूमि प्रमार्जी, खमासमण दइ [illegible] पडिक्कमे पछी त्रण खमासमण दइने चैत्यवंदन करे ।

पाछा जिनमंदिरमांथी नीकळता 'आवस्सही' कहीने उपाश्रये आवे त्यां 'निसिही मत्थएण वंदामि' कही प्रवेश करे अने सो डगला उपरांत गया होय तो इरियावही पडिक्कमे ॥ इति ॥

अथ मध्याह्ने देववंदन विधि ।

ज्यारे बपोरना देववांदे तेमां चैत्यवंदन स्तुति तथा स्तवन आ कहे बाकी विधि पूर्ववत् ।

जगचिंतामणि-चैत्यवंदन ।

जग-चिंतामणि जगनाह, जगगुरु जगरक्खण । जग-बंधव जग-सत्थवाह, जगभाव-विअक्खण । अट्ठावय-संठ-विय-रूव, कम्मट्ठ-विणासण । चउवीसंपि जिणवर जयंतु अप्पडिहय-सासण ॥ १ ॥ कम्म-भूमिहिं कम्म-भूमिहिं, पढम-संघयणि । उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरंत लब्भइ । नवकोडीहिं केवलिण, कोडि-सहस्स-नव साहु गम्मइ । संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोडीहिं वरनाणि । समणह कोडि-सहस्स-दुअ, थुणिज्जइ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ जयउ सामी जयउ सामी, रिसह सत्तुंजि । उज्जिंते पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्च-उरि-मंडण । भरु अच्छे मुणिसुव्वय, मुहरि-पास-दुह-दुरिअ-खंडण । अवर-विदेहे तित्थयरा, चिहुं दिसि विदिसि जि केऽवि । तीअ अणागय-संपइअ, वंदु जिण सव्वेऽवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ । बत्तिसय बासिआइं,

तिभलोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पनरस कोडिसयाइ, कोडि बायाल लरख अडवन्ना । छत्तीस-सहस-असिइ,* सासय-बिंबाइ पणमामि ॥ ५ ॥

श्री अनागत चतुर्विंशति जिन-स्तुति ।

१पद्मनाभ पहेलो जिणंद, १श्रेणिकराय-जीव । आवती चोवीशी हुस्ये, भवसायर-दीव । २सुरदेव २सुपास,-जिव, तीर्थंकर बीजो । जीव ३उदायणनो ३सुपास, जिन नायक तीजो । स्वामी ४स्वयंप्रभ तुरिय जिन, ४पोटिल जीव विचार । ५श्रीसर्वानुभूति पंचमो, जीव ५दढाइ उदार ॥ १ ॥ ६कित्तिय शेठ तणो जीव, ६देवश्रुत छट्ठो । ७उदय तित्थपति सत्तमो, ७शंख जीव विसिट्ठो । ८आणंद केरो जीव हुस्ये, अट्ठम ८पेढाल । ९पोटिल नवमो ९सुणंद-जीव, जगनाथ दयाल । १०श्रुतकीर्ति दसमो १०शतक, श्रावक व्रत गुणधार । ११सुव्रत इग्यारमो तित्थपति, ११रेवइ जीव समार ॥ २ ॥ १२अमम तीर्थंकर बारमो, १२कृष्ण वासुदेव जोइ । १३निःकषाय तेरमो जिणंद, १३शतकी जीव होइ । १४निःपुलाक चौदमो जिनेश, जीव १४बलदेव केरो । शिव सुख लहिस्ये कर्म खपी, टाली भव फेरो । पनरमो जिण १५निर्ममोए, १५सुलसा सारइ जाण । सोलमो १६ चित्रगुप्त-तणो, १६रोहिणी जीव वखाण ॥ ३ ॥ सत्तरमो जिणवर १७समाधि नाम, १७ देवकी जीव जाणु । अढारमो १८संवरनाथ प्रभु, १८सयल जीव वखाणु । १८दीपा

* पाठान्तरे असिआई ।

यणनो जीव हुस्ये, ओगणीशमो जिनपति । १९यशोधर नामे गुण निशाल, नमश्ये मवे सुरपति २०करण जीव २०श्री विजयजिन, वीशमो जग आधार । २१मल्लिनाथ एकवीशमो, २१नारद शीव भडार ॥ ४ ॥ वावीशमो २२जिनदेव नाम, २२अवड जीव होश्ये । तेवीशमो २३श्री अनतवीर्य, जीव २३अमर लहिश्ये । चोवीशमो २४श्रीभद्रकर जिनेश, २४स्वाति भद्रकर सोइ । क्षेत्र–विदेहे सिद्ध हुस्ये, नामातर जोइ । इम चोवीशे जिन थव्या, ए आगामी सिद्ध जाण । श्रीममरचद्र-सूरि जाणज्यु, जाणे गुणमणि ग्वाण ॥ ५ ॥ पछी, जोवो पृष्ट १८ थी २५ प्रमाणे ॥

श्रीतारगा तीर्थ–स्तवन ।

(मिथ्यात्वना रे भद्रा विनयु–ए देशोमां)

स्वामी तारग गिरिवर मडणो, अजित जिनेसर चद । श्रीजिन दरिसने भविक चकोरडा, पामे परमानद ॥ १ ॥ प्रभु में भेट्यो भव भय भजणो, फल्यो मनोरथ आज । उल्ट पहुतो बहुला दिननो, सीधा सघला रे काज ॥ प्र० ॥ २ ॥ पाप टल्याजी पोताना सहु, नाठा मुज अवराय । दीठी मूरति अति रलियामणी, आव्यो वछित दाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ पाजे चडता तरुवर अति घणा, दिसे विविध प्रकार । जात्रा आवे ते नर निसमें, एहनो ए उपगार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ थानक थानक झरणा नीरना, खळहळ वहेता अपार । सामली तरुस्यानी त्रश उपशमे, पीने करण विचार ॥ प्र० ॥ ५ ॥ गेल

करता गिरि शिखरे चढ्या, दीठो भवन उतंग । दक्षिण पश्चिम उत्तर बारणे, पेसता विहसे अंग ॥ प्र० ॥ ६ ॥ जाणे गिरिवर चंगे तारंगे, ए छे मुगट समान । सोहे मोहोजी चिहु दिशी आवता, स्थाप्यो अविचल स्थान ॥ प्र० ॥ ७ ॥ नामा अप्रति नयणे निरखता, प्रभु पद्मासन पूर । बेठा जे प्रभु वाणी सांभले, टाले संशय दूर ॥ प्र० ॥ ८ ॥ मनने भावे ठवणा जिन थया, भाव जिन समवड जाण । निंदित निंद्या वंदित वंदिया, ए संशय मन आण ॥ ९ ॥ सिंहतणे भय वनमा बीहतो, जाणे गयवर सार । लंछनने मिस प्रभुपद अनुसर्यो, शरणागत साधार ॥ प्र० ॥ १० ॥ तेम हुं अंतर रिपु भय बीहतो, आव्यो मननी साख । तुम पद कमले विमले भमरलो, स्वामी शरणे राख ॥ प्र० ॥ ११ ॥ कोटी शिला छे तेहथी ढुकडी, कोडी सिद्धनो ठाम । त्यां छे प्रतिमा जे जिनवर तणी, तेहने कर प्रणाम ॥प्र०॥१२॥ (कलश)-

एम अजित जिनवर सिद्धि सुहंकर तारंग गिरिवर मंडणो, जितशत्रु विजया तणो अंगज दुरित दुःख विहंडणो । संथुण्यो भक्ते सूरि पार्श्वचंद्र जे जुहारे ते सही, वली कुगति वारे आप तारे काज सारे शिव लही ॥ १३ ॥ इति ॥

पछी जेने चोवीहार उपवास न होय ते पच्चख्खाण पारे तेनी विधि आ रीते —

यणनो जीव हुश्ये, ओगणीशमो जिनपति । १९यशोधर नामे गुण निशाल, नमश्ये भवे सुरपति २०करण जीव २०श्री विजयजिन, वीशमो जग आधार । २१मल्लिनाथ एकवीशमो, २१नारद शील भडार ॥ ४ ॥ बावीशमो २२जिनदेव नाम, २२अवड जीव होश्ये । तेवीशमो २३श्री अनतवीर्य, जीव २३अमर लहिश्ये । चोवीशमो २४श्रीभद्रकर जिनेश, २४स्वात भद्रकर सोइ । क्षेत्र-विदेहे सिद्ध हुश्ये, नामातर जोइ । इम चोवीशे जिन थश्या, ए आगामी सिद्ध जाण । श्रीअमरचद्र सूरि आणन्दसु, जाणें गुणमणि खाण ॥ ५ ॥ पछी, जोवो पृष्ट १८ थी २५ प्रमाणे ॥

श्रीतारगा तीर्थ-स्तवन ।

(सिद्धारथना रे नदन विनवु-ए देशीमां)

स्वामी तारग गिरिवर मडणो, अजित जिनेसर चद । श्रीजिन दरिसने मविक चकोरडा, पामे परमानद ॥ १ ॥ प्रभु मे भेटयो भव भय भजणो, फल्यो मनोरथ आज । उलट पहुतो बहुला दिननो, सीधा सघला रे काज ॥ प्र० ॥ २ ॥ पाप टल्याजी पोताना सहु, नाठा मुज अतराय । दीठी मूरति अति रलियामणी, आव्यो वछित दाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ पाजे चडता तरुवर अति घणा, दिशे विविध प्रकार । जात्रा आवे ते नर विसमे, एहनो ए उपगार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ थानक थानक झरणा नीरना, खळहळ वहेता अपार । सामग्री तरस्यानी जश उपशमे, पीने कवण विचार ॥ प्र० ॥ ५ ॥ गेल

करता गिरि शिखरे चढ्या, दीठे भवन उतग । दक्षिण पश्चिम उत्तर बारणे, पेसता विहसे अग ॥ प्र० ॥ ६ ॥ जाणे गिरिवर चगे तारगे, ए छे मुगट समान । सोहे मोहोनी चिहु दिशी आवता, स्थाप्यो अविचल स्थान ॥ प्र० ॥ ७ ॥ नामा अग्रति नयणे निरखता, प्रभु पद्मासन पूर । बेठा जे तसु वाणी साभले, टाले सशय दूर ॥ प्र० ॥ ८ ॥ मनने भावे ठवणा जिन थया, भाव जिन समवड जाण । निंदित निंद्या वदित वदिया, ए सशय मन आण ॥ ९ ॥ सिंहतणे भय वनमा बीहतो, जाणे गयवर सार । लछनने मिस प्रभुपद अनुसर्या, शरणागत साधार ॥ प्र० ॥ १० ॥ तेम हु अतर रिपु भय बीहतो, आव्यो मननी साख । तुम पद कमळे मिळे भमरलो, स्वामी शरणे राख ॥ प्र० ॥ ११ ॥ कोटी शिला छे तेहथी ढुकडी, कोडी सिद्धनो ठाम । त्या छे प्रतिमा जे जिनवर तणी, तेहने करु प्रणाम ॥प्र०॥१२॥ (कलश)–

एम अजित जिनवर सिद्धि सुहकर तारग गिरिवर मडणो, जितशत्रु विजया तणो अगज दुरित दु ख विहडणो । मधुण्यो भक्ते सूरि पार्श्वचद्र जे उदारे ते सही, नवी कुगति वारे आप तारे काज सारे शिव लही ॥ १३ ॥ इति ॥

पछी जेने चोवीहार उपवास न होय ते पच्चखाण पारे तेनी विधि आ रीतेः—

अथ पच्चक्खाण पारवा विधि ।

खमासमण देइ इरियावही, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ, एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कहे । पछी खमासमण देइ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करु ? इच्छं पछी जिरिरिसिह-चैत्यवंदन करी, जंकिंचि नमुत्थुणं जावंति ये गाथा कही सर्व अनन्ता सिद्धने माहरो नमस्कार होजो पछी बे खमासमण पूर्वक स्तवनो आदेश मागी, एक नवकार गणी उवसग्गहर स्तवन कहे ते आ प्रमाणे —

उवस्सग्गहर-स्तवन ।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्म-घण-मुक्कं । विस-हर-विस-निन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ॥ १ ॥ विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गह-रोग-मारी,-दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोऽवि बहु-फलो होइ । नर-तिरिएसुवि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगचं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्प पाय-वब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस !, भत्तिब्भर-निब्भरेण हिअएण । ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास-जिणचंद ! ॥ ५ ॥

पछी जय वियराय कहे त्यार पछी खमासमण देइ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पच्चक्खाण पारवा मुहपत्ति पडिलेहु ? इच्छं कही मुहपत्ति पडिलेहे । पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पच्चक्खाण पारु ? यथा ... खमासमणे इच्छाकारेण० पच्चक्खाण पुरु ?

तहत्ति। पछी जमणो हाथ चरवळा उपर स्थापी, एक नवकार गणी जे पच्चक्खाण कर्युं होय ते नाम लइने पारे ते आ —

उपवास कीधो तिविहार, आयंबिल-नीवी-एकासणु कर्युं तिविहार, पोरसी-साढपोरसी-पुरिमड्ड-अवड्ड-पच्चक्खाण कर्युं चोविहार ॥

आ रीते कहीने पछी पच्चक्खाण पारवा-गाथा बोले ते आ मुजब -

फासिअ पालिअ चेव, सोहिअ तीरिअ तहा। किट्टिअ आराहिअ चेव, विसोहिज्ज जय जई ॥१॥ फासुअ एसणिज्ज च, ज निणेहिं पवेइअ। त च नीर गहिस्सामि, सामाइअ-पोसहे तहा ॥२॥

पछी बे खमासमण पूर्वक सज्झायनो आदेश मागी एक नवकार गणी, अरह देवो-सज्झाय करे ॥ इति ॥

॥ पाणी पीवानी रीति ॥

आ पाणी पीवु होय तो आचेलु अचित्त जळ-कटासणा उपर बेसीने (नवकार गणी) पीए ने पछी पीधेल पात्र (पाटको के प्यालो) लुगडाथी लुछीने मूके-पाणीभरेल पात्र-(वासण) उघाडा न राखे।

॥ आहार करवानी रीति ॥

जो आयंबिल वगेरे करवा घरे जवानु होय तो (दर्शन करवा जवा-विधिमा बतावेल छे ते प्रमाणे तैयार थइ), गुरु महाराजनी रजा लइ ' आवस्सही मत्थएण वंदामि ' कही,

इर्यासमिति शोधता-(जयणाथी) जाय अने घरमां प्रवेश करीने-चरवळाथी भूमि पुजी, कटासणु-(आसन) नाखी-बेसी, स्थापना स्थापीने इरियावही पडिकमे पछी आहार करवाने ठेकाणे काजो लइ, पाटलो-थाळी विगेरे भाजन ले अने जोगवाइ होय तो मुनिने दान देइ-(अतिथि संविभाग करसी) ने निश्चल आसने [१]मौनपणे आहार करे

आयंबिल वि० करवा जेने घरे जगु न होय ते पोसहशाळाए (उपाश्रये) पुंजे (पोसह लीधा पहेला) प्रेरीत पुत्रादिके आणेलो आहार करे। ते त्या-(पोसहशाळामां) एक बाजु जमीन प्रमार्जी कटासणु पाथरी-बेसी भाजन विगेरे पुंजीने निश्चल आसन मौनपणे आहार करे ते पण लीधेल वस्तुमांथी बील्कुल पाछु मूके नहीं अने थाळी धोइने पाणी पी जाय।

कारण विना सोपारी-लविंग विगेरे ग्रहण न करे पछी मुख शुद्ध करीने—

घरे जमनारे पोसहशाळाए (उपाश्रय) आवीने अने पोसहशाळाए जमनारे पोसहशाळामांज स्थापनाचार्य-सन्मुख आवी खमासमण देइने इरियावही तस्स उत्तरी अन्नत्थ कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स कही पछी

जगचिंतामणि-चैत्यवंदन ॥

जग-चिंतामणि जगनाह, जगगुरु जगरक्खण। जग-बंधव जग-सत्थवाह, जगभाव-विअक्खण। अट्ठावय-संठ-विय-रूव, कम्मट्ठ-विणासण। चउवीसंपि जिणवर जयंतु अप्पडिहय-सासण ॥ १ ॥ कम्म-भूमिहिं कम्म-भूमिहिं,

---

१ जमता कारण पडे तो पाणी पीने बोले।

पउम-सयथणि । उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरत लब्भइ । नवकोडीहिं केवलिण, कोडि-सहस्स-नव साहु गम्मइ । सपइ जिणवर वीस मुणि, बिहु कोडीहिं वरनाणि । समणह कोडि-सहस्स-दुअ, थुणिज्जइ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ जयउ सामी जयउ सामी, रिसह सत्तुजि । उज्जिते पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्च-उरि-मडण । मरु-अच्छे मुणिमुव्वय, मुहरि-पास-दुह-दुरिअ-खडण । अवर-विदेहे तित्थयरा, चिहु दिसि विदिसि जिं केऽवि । तीअ अणागय-सपइअ, वदु जिण सव्वेऽवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ । बत्तिसय बासिआइ, तिअलोए चेइए वदे ॥ ४ ॥ पनरस कोडिसयाइ, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना । छत्तीस-सहस्स-असिइ, सासय-बिंबाइं पणमामि ॥ ५ ॥

पाँची-॥ जकिंचि ॥

जकिंचि नाम तित्थ, सग्गे पायालि तिरियलोअम्मि । जाइ जिण-बिंबाइ, ताइ सव्वाइ वदामि ॥ १ ॥

छठी-॥ नमुत्थुण ॥

नमुत्थुण अरिहताण भगवताण ॥१॥ आइगराण तित्थयराण सयसबुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण पुरिस-सीहाण पुरिसवरपुडरी-याण पुरिस-वर-गध-हत्थीण ॥३॥ लोगुत्तमाण लोग-नाहाण लोग-हियाण लोग-पईवाण लोग-पज्जोअगराण ॥४॥ अभय-

भयाणं चक्खु-दयाण मग्ग-दयाण सरण-दयाण जीव-दयाणं बोहि-दयाणं॥५॥धम्म-दयाण धम्म देसियाणं धम्म नायगाणं धम्म सारहीण धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं॥६॥दीवो-ताण सरण-गइ-पइट्ठा अप्पडिहय-वरनाण-दंसण धराण वियट्ट-छउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं तिन्नाण तारयाण बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूण सव्व-दरिसीणं सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति-सिद्धिगइ-नाम-धेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाण जिअभयाण ॥९॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिऽणागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, जावंत केवि साहू ये गाथा ।

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिय-लोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥ जावंत केऽवि साहू, भरह-रवय-महाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाण ॥ २ ॥

उवसग्गहर-स्तवन ।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्म-घण-मुक्कं । विसहर-विस-निन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ॥ १ ॥ विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गह-रोग-मारी,-दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ

करेमि ? इच्छं कही एक नवकार गणी, अरह देवोनी (पृ १४मा) सज्झाय छे ते करे, त्यार बाद वांदणा बे देइ पच्चक्खाण[1] करे।

पछी खमासमण देइ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि-पडिलेहण संदिसाहुं? बीजे खमासमणे इच्छाकारेण० उपधि-पडिलेहण करेमि? इच्छं कही, बाकी रहेल वस्त्रो पडिलेहे।

* पछी डंडासण लइ तेनु पडिलेहण करी काजो ले' ए काजानी अंदर जीवजंतु बराबर तपासी जयणाथी काजाने सुपडीमां लइ शुद्ध जग्या जोइ 'अणुजाणह जस्सुग्गहो' कही परठवे परठवीने वोसिरे त्रणवार कहे। इति॥

पछी स्थापनाजी पासे आवीने देव वांदे तेनी विधि आ प्रमाणे —

॥ अथ साजे देववंदन-विधि ॥

खमासमण देइ इरियावही तस्स उत्तरी, अन्नत्थ, बोली एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कहे।

पछी उत्तरासण करी, खमासमण देइ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही नीचे बेसी डाबो ढींचण उंचो राखी बे हाथ जोडी चैत्यवंदन बोले तेमां (साजना देव वांदवामां) चैत्यवंदन, स्तुति तथा स्तवन आ कहे बाकी विधि पूर्ववत् ।

---

१ पाणी पीवु होय तो पच्चक्खाण प्रतिक्रमणने अन्ते करे।

॥ अथ साजनी पडिलेहणा-विधि ॥

खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पडिपुन्ना पोरसी? बीजे खमासमणे इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहिय पडिक्कमामि? एम कही इरियावही, तस्स उत्तरी अन्नत्थ कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कहे। पछी

दिवसना पोसहवाळा तथा रात्रिना पोसह लेनारने माटे पडिलेहणा विधि अहिंथी शरु थाय छे)

खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन पडिलेहण संदिसाहुमि? बीजे खमासमणे इच्छाकारेण० पडिलेहण करेमि? इच्छं कही, १ मुहपत्ति २ चरवळो, ३ कटासणु, ए त्रणवाना पडिलेहे। पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अंग-पडिलेहण संदिसाहुमि? बीजे खमास मणे इच्छाकारेण० अंग-पडिलेहण करेमि? इच्छं कही १ सूत्रनो कंदोरो २ धोतीयु तथा ३ उत्तरासण ए त्रण वस्तु पडिलेहे। पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पोसहशाला प्रमार्जुं? एम कही पोसहशालानो काजो एक स्थानके भेगो करे-एटले जेटलामां अंग पडिलेहण कर्युं होय तेटला माथी चरवळावती काजो लइ एक बाजु एकठो (भेगो) करे।

पछी खमासमण देइ इरियावही तस्सउत्तरी अन्नत्थ कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कहे पछी खमासमण देइ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पडिलेहणा पडिलेहावोजी? एम कही स्थापनाचार्यजीनी वैयावच्च करे।

पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहुमि? बीजे खमासमणे इच्छाकारेण० सज्झाय

॥ श्री सिद्धचक्र-स्तुति ॥

उप्पन्न-सन्नाण-महो-मयाण, सपाडि-हेरासण-सठि-याण । सद्देसणा-णदिय-सज्जणाण, नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥ सिद्धाण-माणद-रमा-लयाण, नमो नमोऽणत-चउक्कयाण । सूरीण दूरीकय कुग्गहाण, नमो नमो सूर-सम-प्पहाण ॥ २ ॥ सुत्तत्थ-वित्थारण-तप्पराण, नमो नमो वायग-कुजराण । साहूण ससाहिय-सजमाण, नमो नमो सुद्ध-दया-दमाण ॥ ३ ॥ जिणुत्त-तत्ते रुइ-लक्खणस्स, नमो नमो निम्मल-दसणस्स । अन्नाण-समोह-तमो-हरस्स, नमो नमो नाण-दिवायरस्स ॥ ४ ॥ आराहिआ-ऽखडिअ-सक्कि-यस्स, नमो नमो सजम-वीरियस्स । कम्मद्दु-मुम्मूलण-कुज-रस्स, नमो नमो तिव्व-तवो-भरस्स ॥ ५ ॥

इअ नवपय-सिद्ध लद्धि-विज्जा-समिद्ध,
पयडिय-सरवग्ग ह्रींति-रेहा-समग्ग ।
दिसिवइ-सुरसार खोणि-पीढा-वयार,
तिजय-विजय-चक्क सिद्धचक्क नमामि ॥ ६ ॥

पछी चैत्यवदन (पृष्ठ १८मा जकिंचि थी ५१ प्रमाणे) करवु

॥ श्रीसुमतिनाथजिन-स्तवन ॥

(मोह्यो मुन मन तुम गुणे -ए देशीमा)

वश इक्ष्वागे राजीयो, सोवन वर्ण शरीरोजी । महिमा जग जसु महमहे, मदिर गिरि जेम धीरोजी ॥ १ ॥ सुमति-जिणद जुहारीये, स्वामी सुमति तणा दातारोजी । मात सुम-

श्रीआदिनाथजिन-चैत्यवदन ।

सिरि-सिद्ध चक्र-नवपय,-महल्ल-पढमिल्ल-पयमय ! जिणद ! । असुरिंद-सुरिंदचिय,-पयपऊय ! नाह ! तुज्ज नमो ॥१॥ सिरि-रिसहेसर-सामिय !, कामिय-फलदाण-कप्पतरु-कप्प ! । कदप्प-दप्प-गजण !, भव-भजण ! देव ! तुज्ज नमो ॥ २ ॥ सिरि-नाभि-नाम-कुलगर,-कुलकम-लुल्लास-परम-हस-सम !। असम-तमतम-तमोभर, हरणिक-पईव ! तुज्ज नमो ॥ ३ ॥ सिरि-मरुदेवा-सामिणि,-उदर-दरी-ऽदरिय-केसरि-किसोर ! । घोर-भुय-दड-खडिय,-पयड-मोहस्स ! तुज्ज नमो ॥ ४ ॥ इक्खागु-वस-भूसण !, गय-दूसण ! दुरिय-मयगल-मइद ! । चद सम-वयण वियसिय,-नीलुप्पल-नयण ! तुज्ज नमो ॥ ५ ॥ कल्लाण-कारणुत्तम,-तत्त-कणय-कलस-सरिस-सठाण ! । कठ-ट्ठिय-कल कुतल,-नीलुप्पत्र-कलिय ! तुज्ज नमो ॥ ६ ॥ आईसर ! जोईसर,-लय-गय-मण-लक्ख-लक्खिय-सरूव ! । भव-कूव-पडिय-जतु,-त्तारण ! जिणनाह ! तुज्ज नमो ॥ ७ ॥ सिरि-सिद्धसेल-मडण !, दुह-खडण ! खयरराय-नत-पाय ! । सयल मह सिद्धि-दायग ! जिणनायग ! होउ तुज्ज नमो ॥ ८ ॥ तुज्ज नमो तुज्ज नमो, तुज्ज नमो देव ! चेव तुज्ज नमो । पणय-सुर-रयण-सेहर,-रइ-रजिय पाय ! तुज्ज नमो ॥९॥ पछी उभा थइ स्तुति (थोइ) बोलवी

॥ श्री सिद्धचक्र-स्तुति ॥

उप्पन्न-सन्नाण-महो-मयाण, सपाडि-हेरासण-सठि-याण । सद्देसणा-णंदिय-सज्जणाण, नमो नमो होउ सया जिणाण ॥ १ ॥ सिद्धाण-माणंद-रमा-लयाण, नमो नमोऽणंत-चउक्कयाण । सूरीण दूरीकय कुग्गहाण, नमो नमो सूर-सम-प्पहाण ॥ २ ॥ सुत्तत्थ-वित्थारण-तप्पराण, नमो नमो वायग-कुंजराण । साहूण संसाहिय-संजमाण, नमो नमो सुद्ध-दया-दमाण ॥ ३ ॥ जिणुत्त-तत्ते रुइ-लक्खणस्स, नमो नमो निम्मल-दंसणस्स । अन्नाण-संमोह-तमो-हरस्स, नमो नमो नाण-दिवायरस्स ॥ ४ ॥ आराहिआ-ऽखंडिअ-सक्कि-यस्स, नमो नमो संजम-वीरियस्स । कम्मद्दु-मुम्मूलण-कुंजरस्स, नमो नमो तिव्व-तवो-भरस्स ॥ ५ ॥

इअ नवपय-सिद्ध लद्धि-विज्जा-समिद्ध,
पयडिय-सरवग्ग ह्रींति-रेहा-समग्ग ।
दिसिवइ-सुरसार खोणि-पीढा-वयार,
तिजय-विजय-चक्क सिद्धचक्क नमामि ॥ ६ ॥

पछी देववंदन (पृष्ठ १८मा जंकिंचि थी ४५ प्रमाणे) करवु

॥ श्रीसुमतिनाथजिन-स्तवन ॥

(मोह्यो मुन मन तुम गुण -ए दशामा)

यश इक्ष्वागे राजीयो, सोवन वर्ण शरीरोजी । महिम जग जसु महमहे, मंदिर गिरि जेम धीरोजी ॥ १ ॥ सुमति जिणंद जुहारीये, स्वामी सुमति तणा दातारोजी । मात सुम

गळा उर घर्या, मेघ नरेंद्र मल्हारोजी. सुमति० ॥ २ ॥ सारस वाणी रस रसे, कोयल जेम सहकारोजी । लछन मिसे सेवा करे, प्रभु तरण तारण ससारोजी. सु० ॥ ३ ॥ गर्भ छतां सुत कारणे,माडयों शोक्ये विवादोजी । प्रभु जननी ते टाळीयो, प्रसर्यो जग जश नादोजी. सु० ॥ ४ ॥ सुमति नाम तिण जिनतणो, दीधो करी उछाहोजी । इण नामे प्रभु समरतां, होइये वछित लाहोजी सु० ॥ ५ ॥ देहमान धनु, तीनसें, जेहनो जगह विदितोजी । सजम अवसर आदरी, मोह मल्ल जिण जितोजी सु० ॥ ६ ॥ पार्श्वचद्रसूरि विनवे, सुमति सदा मुज देजोजी । पचम गति देवा तणी, माहरी विनति सफल करेजोजी सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

देवरदन कया पछी जेने रात्रि पोसह होय तेने—

॥ साजे पडिकमणु शरु कर्या पहेला करवानी क्रिया ॥

जो रात्रि पोसह होय तो कुडळ ले अने चुनावाळु पाणी राखे पछी खमासमण देइ इरियावही तस्स उत्तरी, अन्नत्थ कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कहे[1] ।

पछी खमासमण दइ इच्छकारी भगवान पसाय करी पच्चखाण करावोजी

पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण सदिसह भगवन्

---

१ पडिलेहण करती वखते पच्चखाण न कर्यु होय तो अहीं लेवु ।

थंडिल भूमि प्रमार्जुं ? पम कही, चोवीश मांडला[1] करे
प्रथम संथारा पासेनी जग्याए —

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे	पासवणे अणहियासे ।
२ आघाडे आसन्ने	पासवणे अणहियासे ।
३ आघाडे मज्जे उच्चारे	पासवणे अणहियासे ।
४ आघाडे मज्जे	पासवणे अणहियासे ।
५ आघाडे दूरे उच्चारे	पासवणे अणहियासे ।
६ आघाडे दूरे	पासवणे अणहियासे ।

बीजा उपाश्रयना द्वार माहेनी तरफ —

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे	पासवणे अहियासे ।
२ आघाडे आसन्ने	पासवणे अहियासे ।
३ आघाडे मज्जे उच्चारे	पासवणे अहियासे ।
४ आघाडे मज्जे	पासवणे अहियासे ।
५ आघाडे दूरे उच्चारे	पासवणे अहियासे ।
६ आघाडे दूरे	पासवणे अहियासे ।

त्रीजा उपाश्रयना द्वार बहारना भाग तरफ —

१ अणाघाडे आसन्ने उच्चारे	पासवणे अणहियासे ।
२ अणाघाडे आसन्ने	पासवणे अणहियासे ।
३ अणाघाडे मज्जे उच्चारे	पासवणे अणहियासे ।

---

१ आ मांडला करवानो हेतु-रात्रिए पोसहमां वडीनीति, लघुनीति वगेरे परठववा योग्य जग्या जोवाने माटे छे ।

आदेश मागी एक नवकार गणी, उवसग्गहर स्तवन तथा जयवीयराय सुधी कहे ।

पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पोसह पारवा मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं कही मुहपत्ति पडिलेही खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पोसह पारु ? यथाशक्ति बीजे खमासमणे इच्छाकारेण० पोसह पार्यु ? तहत्ति कही चरवळा उपर जमणो हाथ स्थापी, एक नवकार गणीने-सागरचंदो कहे ते आ प्रमाणे

सागरचंदो कामो, चंदवडिंसो सुदंसणो धन्नो ।
जेसिं पोसह-पडिमा, अखंडिआ जीवियंतेऽवि ॥ १ ॥
जे तत्र-सोसिय-काया, ते सव्वे हुंति सथुआ जाया ।
आणंद-कामदेवा, सुसावया दसवि ते धन्ना ॥ २ ॥
धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणंद-कामदेवा य ।
जासु पसंसइ भयवं, दढव्वय त महावीरो ॥ ३ ॥
पोसहे सुद्धे भावे, असुहाइ खवेइ नत्थि संदेहो ।
छिंदइ तिरिनिरयगइ, पोसहविहिअप्पमत्तो य ॥ ४ ॥
पोसह-सामाइअ-सं,-ठिअस्स जीवस्स जाइ जो कालो ।
सो सफलो बोधव्वो, सेसो संसार-फलहेऊ ॥ ५ ॥

पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पारु ? यथाशक्ति बीजे खमासमणे इच्छाकारेण० सामायिक पार्यु ? तहत्ति पछी चरवळा उपर जमणो हाथ स्थापी एक नवकार गणी सामाइअ वयजुत्तो कहे ते आ मुजब —

सामाइअ-वयजुत्तो, जाव मणे होइ नियम-संजुत्तो, छिन्नइ असुहं कम्म, सामाइअ-जत्तिआवारा ॥ १ ॥ सामाइअम्मि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा। एएण कारणेण, बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥

पोसह-सामायिक-व्रत विधिए लीधु, विधिए पार्यु, विधि करता, जे काइ अविधि आशातना थइ होय, ते सवि हु मन वचन कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कड.

दश मनना, दश वचनना, बार कायाना, एवकारे बत्रीश दूषणमा, जाणता अजाणता जे काइ दूषण लाग्यु होय, तस्स मिच्छामि दुक्कड। (पछी त्रण नवकार गणे)। इति।

रात्रि पोसहवाळा पडिक्कमणु करीने सज्झाय ध्यान (भणवु गणवु) करे पछी ज्यारे एक पहोर रात्रि जाय त्यारे संथारा पोरसी भणावे ते आ रीते –

॥ अथ राइ संथारा पोरसी-विधि ॥

खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बहु पडिपुन्ना पोरसी ? बीजे खमासमणे इच्छाकारेण० इरियावहिय पडिक्कमामि ? एम कही इरियावही, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ एक लोगस्स काउस्सग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स कहो। पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बहुपडिपुन्ना पोरसी चैत्यवंदन करु ? इच्छं कही नीचे बेसी चउक्कसायनुं चैत्यवंदन कही जंकिंचि, नमुत्थुण जावंति जावंत, उवसग्गहर,

जयवियराय कहीने खमासमण दइ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् राइ सथारा पोरसी मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छ कही, मुहपत्ति पडिलेहे पछी नीचे प्रमाणे 'सथारा पोरसी' नो पाठ बोले —

अणुजाणह जिट्ठिज्जा !, जिट्ठिज्जा ! निसिहि नमो !
खमासमणाण गोय,–माईण महामुणीण ॥ १ ॥ पछी
नवकार तथा करेमि भते नो पाठ त्रण वार कहे । पछी

अणुजाणह परमगुरु !, गुणगण–रयणेहि मडिय–सरीरा !
बहुपडिपुन्ना–पोरसी, राइअ सथारय ठामि ॥ १ ॥ अणुजा
णह सथारय, बाहु–वहाणेण वाम–पासेण । कुक्कुड–पाय–
पसारण, अतरतो पमज्जए भूमि ॥ २ ॥ सकोइअ सडासा,
उव्वट्टते अ काय–पडिलेहा । दव्वाइ उवओगा, उस्सास–
निरुभणाऽलोए ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सि
माइ रयणीए । आहार–मुवहि–देह, सव्व तिविहेण[१] वोसिरे
॥ ४ ॥ अरिहतो मह देवो, जावज्जीव सुसाहुणो गुरुणो ।
जिण–पन्नत्त तत्त, इअ सम्मत्त मए गहिअ ॥ ५ ॥

चत्तारि मगल–अरिहता मगल, सिद्धा मगल, साहू मगल, केवलि–पन्नत्तो धम्मो मगल । चत्तारि लोगुत्तमा–अरिहता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि–पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारिसरण पवज्जामि–अरिहते सरण

---

१ पाठातरे चरिम उस्सासेण ।

पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलि-पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥

चउरंगो जिणधम्मो, न कओ चउरंग-सरणमवि न कयं। चउरंग-भव-च्छेओ, न कओ हा! हारिओ जम्मो ॥१॥ अरिहंत-सिद्ध-साहू, केवलि-कहिओ सुहावहो धम्मो। एए चउरो चउगइ,-हरणा सरणं लहइ धन्नो ॥२॥ पाणाइवाय-मलिअं, चोरिक्क मेहुणं-दविण-मुच्छं। कोहं माणं मायं, लोभं पिज्जं तहा दोसं ॥३॥ कलहं अब्भक्खाणं, पेसुन्नं रइअरइ-समाउत्तं। परपरिवायं माया,-मोसं मिच्छत्तसल्लं च ॥४॥ वोसिरिसु इमाइं मुक्खमग्ग-संसग्ग-विग्घ-भूआइं दुग्गइ-निबंधणाइं, अट्ठारस-पाव-ठाणाइं ॥५॥

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाउ, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चउद लाख अनंतकाय, बे लाख बेइंद्री, बे लाख तेइंद्री, बे लाख चउरिंद्री, चार लाख नारकी, चार लाख देवता, चार लाख तिर्यंच, पचेंद्री चउद लाख मनुष्य पचेंद्री, एवकारे चोराशी लाख जीवा जोनिने विषे माहारे जीवे जे कोइ पाप कर्युं होय, कराव्युं होय, करतां मत्ये मलु जाण्युं होय, ते सवि हुं मन वचन कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

एगोऽहं नत्थि मे कोइ, नाहं-मन्नस्स कस्सइ। एवं अदीण-मणसो, अप्पाण-मणुसासइ ॥१॥ एगो वयइ जीवो.

जयवियराय कहीने खमासमण दई इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राई संथारा पोरसी मुहपत्ति पडिलेहु ? इच्छं कही, मुहपत्ति पडिलेहे पछी नीचे प्रमाणे 'संथारा पोरसी 'नो पाठ बोले —

अणुजाणह जिट्ठिज्जा !, जिट्ठिज्जा ! निसिहि नमो ।
खमासमणाण गोय,-माईण महामुणीण ॥ १ ॥ पछी
नवकार तथा करेमि भंते नो पाठ त्रण वार कहे । पछी

अणुजाणह परमगुरु !, गुणगण-रयणेहि मंडिय-सरीरा। बहुपडिपुन्ना-पोरसी, राइअ संथारय ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारय, बाहु-वहाणेण वाम-पासेण । कुक्कुड-पाय-पसारण, अतरंतो पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥ संकोइअ संडासा, उव्वट्टंते य काय-पडिलेहा । दव्वाइ उवओगा, उस्सास-निरुंभणाऽलोए ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सि माइ रयणीए । आहार-मुवहि-देह, सव्वं तिविहेण[१] वोसिरे ॥ ४ ॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो । जिण-पन्नत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहिअ ॥ ५ ॥

चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पन्नत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि-पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारिसरणं पवज्जामि-अरिहंते सरणं

---

१ पाठांतरे चरिम उस्सासेण ।

पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलि-पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥

चउरंगो जिणधम्मो, न कओ चउरंग-सरणमवि न कयं। चउरंग-भव-च्छेओ, न कओ हा! हारिओ जम्मो ॥ १ ॥ अरिहंत-सिद्ध-साहू, केवलि-कहिओ सुहावहो धम्मो। एए चउरो चउगइ,-हरणा सरणं लहइ धन्नो ॥ २ ॥ पाणाइवाय-मलिअं, चोरिक्कं मेहुणं-दविण-मुच्छं। कोहं माण माय, लोभ पिज्ज तहा दोसं ॥ ३ ॥ कलहं अब्भक्खाणं, पेसुन्न रइअरइ-समाउत्तं। परपरिवाय माया,-मोस मिच्छत्तसल्लं च ॥ ४ ॥ वोसिरिसु इमाइं मुक्खमग्ग-संसग्ग-विग्घ-भूयाइं दुग्गइ-निबंधणाइं, अट्ठारस-पाव-ठाणाइं ॥ ५ ॥

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाउ, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पति-काय, चउद लाख अनंतकाय, बे लाख बेइंद्री, बे लाख तेइंद्री, बे लाख चउरिंद्री, चार लाख नारकी, चार लाख देवता, चार लाख तिर्यंच, पचेंद्री चौद लाख मनुष्य पचेंद्री, एवकारे चोराशी लाख जीवा जोनिने विषे माहारे जीवे जे कोइ पाप कर्यु होय, कराव्यु होय, करतां प्रत्ये भलु जाण्यु होय, ते सवि हु मन वचन कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

एगोऽहं नत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सइ। एवं अदीण-मणसो, अप्पाण-मणुसासइ ॥ १ ॥ एगो मे सासओ

एगो चेव उवज्जइ । एगस्स होइ मरणं, एगो सिज्जइ नीरओ ॥ २ ॥ एगो मे सासओ अप्पा, नाण-दसण-संजुओ । सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे सजोगलख्खणा ॥ ३ ॥ संजोग -मूला जीवेण,पत्ता दुख्ख परपरा। तम्हा सजोग-संबध,सव्वे तिविहेण वोसिरे ॥४॥ पछी सात नवकारनो काउस्सग्ग करे. पछी ज्यारे निद्रा पीडित थाय त्यारे संथारो करे ते आ प्रमाणे

॥ (रात्रे) संथारो करवानी रीति ॥

प्रथम जमीन पडिलेहीने संथारीयु अथवा कामळी पाथरे, तेना उपर उत्तरपट्टो (एक पडवाळो ओछाड) पाथरे पछी मुहपत्ति-चरवळो पडखे मूकी मातरीयु पहेरीने डाबे पडखे हाथनु ओसीकु करीने सुवे ।

पछी पाछली रात्रे जागी नवकार गणी भावना भावी मात्रानी बाधा टाळी आवे पछी रात्रि पोसहवाळाओने

सवारमां उठीने करवानी क्रिया ।

खमासमण दइ इरियावही तस्स उत्तरी अन्नत्थ एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही कुसुमिण दुसुमिणनो काउस्सग्ग करीने विधिथी राइ पडिकमणु करे ।

पछी समय थाय त्यारे 'सवारनी पडिलेहणा (पृ १३-१५ प्रमाणे)-विधि ' वडे पडिलेहण करे अने (पृ १४ प्रमाणे) 'सज्झाय करवा विधि थी सज्झाय करे । पछी देववांदे तेमा चैत्यवदन निचे प्रमाणे ।

आ रीते सथारा पोरसी कहीने पछी नवकार गणे, ससार-स्वरूप भावे, अर्थ विचारे, निद्रा टाळवानी यत्न करे । इति ।

॥ श्रीविमलाचलमंडन – आदिनाथजिन – चैत्यवंदन ॥

आदिनाथ ! जगन्नाथ !, विमलाचल मंडन ! ।
जय नाभि-कुलाकाश,-प्रकाशन-दिवाकर ! ॥१॥
तव नाथ ! पदांभोज,-सेवा-ऽतिदुर्लभा भवेत् ।
पुण्य-संभार हीनानां, कल्पवल्लीव देहिनां ॥ २ ॥
ते धन्या मानवा देवा, यैरापि तव शासनं ।
वंदनीया विभो ! ते ये, वंदंते भवतः पदौ ॥३॥
प्रचंडतम रागादि,-रिपु-संघात घातक ।
श्रीयुगादि जिनाधीश, देव वंदे सदा मुदा ॥४॥
श्रीशत्रुंजय-कोटीर !, कृत राज्यश्रिया विभो ! ।
सर्वांऽघ-नाशनं मेऽस्तु, शासनं ते भवे भवे ॥५॥ पछी:-

॥ श्रीसिद्धाचलमंडन – युगादिजिन – स्तुति ॥

पूर्णानंदमय महोदयमय कैवल्य-चिद्दृग्मय, रूपातीतमय स्वरूप-रमण स्वाभाविकी श्रीमय । ज्ञानोद्योतमय कृपारसमय स्याद्वाद-विद्यालय, श्रीसिद्धाचलतीर्थराज मनीश वंदेऽह-मादीश्वर ॥१॥ श्रीमद्-युगादीश्वर मात्मरूप, योगींद्र-गम्य विमलाद्रिसंस्थ । सद्ज्ञान-सद्दृष्टि-सुदृष्ट लोकं, श्रीनाभिसूनु प्रणमामि नित्यं ॥ २ ॥ राजादनाऽधस्तन भूमिभागे, युगादि-देवांघ्रि-सरोजपीठं । देवेंद्रवंद्य नरराजपूज्यं, सिद्धाचलाग्रस्थित-मर्चयामि ॥ ३ ॥ आदिप्रभो-र्दक्षिण-दिग्विभागे, सहस्र-कूटे जिनराज-मूर्ती । सौम्याकृतीः सिद्धतती

निर्माथ, शत्रुंजयस्थाः परिपूजयामि ॥ ४ ॥ आदिमभो-र्वक्त्र-सरोरुहाच, विनिर्गता श्रीत्रिपदी-मवाप्य । यो द्वाद-शांगी विदधे गणेशः, स पुंडरीको जयताच्छिराद्रौ ॥ ५ ॥

पछी (पृ. १८मा नकिचिथी पृ. २५सुधी देववंदन करवु)

॥ श्री शत्रुजयमंडन ऋषभदेवजिन-स्तवन ॥

सफल एह अवतार माहारो, इणे ससार असार । नरभव लही हरखे मन वाध्यो, देवगुरु धर्म विचार भावसु ॥ १ ॥ जतन विमलगिरि चडश्यु, शुद्धे ध्यान रतन मन जडश्यु । श्रीरिसहतणा गुण ग्रहीश्यु, ए तो मन वांछित फल लहीश्यु, भा० जतन० ॥ २ ॥ करत विचार श्रवणे सांभळीयो, श्रीशे-त्रुजे तीरथ सार । इणगिरि सिद्धि अनंता पहुता, टाळी भव अवतार, भा० जतन० ॥ ३ ॥ सहस सहस मुनिवर परवरिया, थावच्चा शुक सिद्धा । पच सयासु सेलग मुनिपति, शिवन-गरी पद लीद्धा, भावसु ज० ॥ ४ ॥ पांडव पच य जालि मयालि, प्रमुख यादव रिद्धि छडी । तप जप कर्म खपीने इण गिरि, भीवि मुक्तिसु मंडी भा० ज० ॥ ५ ॥ अतुल अतुल सिद्ध अनंता, सूत्र वचन सद्दहीए । जेहनु नाम विशेष न लहीए, ते तीरथ केम कहीए भा० ज० ॥ ६ ॥ उत्तम पुरुषे इणगिरि नासो, तिणे ए तीरथ भणीए । तसु दसण जे भावे पामे, सफल जनम तसु गणीए मा० ज० ॥७॥ तिणे कारण मुज मन उमाहु, श्रीशेत्रुजे जात्रा काज । मोरवणी पेरे

हुवो हरखित, साभळी जलधर, गाज. भा० ज० ॥ ८ ॥
नरभव पामी छह री पालत, विधिसु यात्रा करीए । प्रवहण-
पुरी जेम व्यापारी, हेठे भवजल तरीए भा० ज० ॥ ९ ॥
१ब्रह्मचारीने २भूमिसथारी, लहीए ३एकल आहारी । ४पदचा-
रीने ५सचित्त परिहारी, ६शुद्धा समकितधारी भा० ज०
॥ १० ॥ धन्य वरस धन्य मास ए पक्ष, धन्य दिवस धन्य
याम । धन्य घडी धन्य धन्य ए वेळा, जिण प्रभु करु
प्रणाम. भा० ज० ॥ ११ ॥ विनवीए श्री शेत्रुंजा स्वामी,
वळी वळी दरशण देजो । करजोडी पार्श्वचंद्रसूरि बोले, विनती
सफल करेजो भा० ज० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ सवारे पोसह पारवा-विधि ॥

देवचंदन कर्या पछी कुंडी, पाणी, कुंडळ विगेरे जाचेली
चीजो होय ते पाछी छुटा श्रावकने भळावे ।

पछी खमासमण देइ, इरियावही तस्स उत्तरी, अन्नत्थ,
एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स
कही पोसह पारवा मुहपत्ति पडिलेहे पछी 'नवकार गणे
पछी पृ ४६ मा सागरचंदो कामोनी गाथाथी पोसह पारे
पछी सामाइय वयजुत्तो कही, त्रण नवकार गणवा ॥ इति ॥

पोसह विधि-समाप्त

॥ श्रावकना २१ गुण ॥

१ अक्षुद्र-क्षुद्र मतिवाळो न होय पण गंभीर होय ।

२ रूपवान्-शरीर संबंधी सुंदर अंगोपांगवाळो होय ।

३ प्रकृतिसौम्य-स्वभावथी पापदोष रहित एटले शांत स्वभावी होय ।

४ लोकप्रिय-विनयादि गुणे करी जनसमूहने प्रिय होय ।

५ अक्रूर-क्रूर आकृतिथी रहित एटले पवित्रहृदयी होय ।

६ भीरु-आलोक तथा परलोक संबंधीना दु:खथी अने अपयशथी डरतो रहे ।

७ अशठ-कुडकपटथी रहित होय एटले सज्जन होय ।

८ सुदाक्षिण्यवान्-समयोचित वर्त्तो सामा माणसनुं दील प्रसन्न करनार होय ।

९ लज्जालु-स्वप्नुलादिकनी लज्जावाळो होय ।

१० दयालु-प्राणीमात्र उपर दयाभाव राखनार होय ।

११ मध्यस्थ सोमदृष्टी-सौम्य दृष्टिवाळो होय एटले निष्पक्षपातपणे वस्तुतत्त्वने यथार्थ रीते ओळखी मध्यस्थताथी दोषने दूर करनार होय ।

१२ गुणरागी-गुणी पुरुषोने मान आपनार तथा तेओनोज पक्ष करनार होय ।

१३ सत्कथाख्य-सारी सारी धर्मसबंधी कथाओनो उपदेश करनार होय ।

१४ सुपक्षयुक्त-कुटुंबवर्ग धर्ममार्गे जोडाय एवा अनुकूळ परिवारयुक्त होय ।

१५ सुदीर्घदर्शी-दरकोइ कार्यमा प्रथमथी सारी रीते विचार करीने परिणामे जेमा लाभ समायो होय एवा शुभ कार्य करनार होय ।

१६ विशेषज्ञ-गुण दोष, हित अहित, गम्य अगम्य विगेरेनो जाणकार होय ।

१७ वृद्धानुगामी-परिपक्व बुद्धिवाळा वृद्ध पुरुषोने अनुसरी चालनारो होय ।

१८ विनयी-गुणाधिक पुरुषनु उचित गौरव (बहुमान) करनारो होय ।

१९ कृतज्ञ-कर्या उपकारनो जाणनार होय ।

२० परहितार्थकारी-स्वार्थ विना परहित करवामा तत्पर होय ।

२१ लब्धलक्ष-धर्मसबंधी दरेक विधिमा तथा व्यवहारमा कुशळ होय ।

ए एकवीश गुण जेमा होय ते प्राणी धर्मरूप रत्न पामवानी योग्यतावत कहेवाय ।

१०९ श्री जिनेश्वरनु स्तवन.

(राग-हीरज्जाकी चाल)

अरज हमारी सुन लिजीये, जिनमतके राजा, अरज०॥ दुस्मन क्रोधादिक लगारे, पच प्रमाद ठगेरा, तेरे काठिया केड न मूके, विषयादिक रहे घेरारे, जिनमतके राजा, अरज० ॥ १ ॥ आठ करम मोहे नाच नचावे, जोनी लाख चौरासी, निज गुण विण कछु काम न सरियो, तुमसे कहु अविनाशी रे ॥जि० अरज०॥२॥ धरम धरम करतो जग ढुंढे, धरम मरम नही जाने, साचे धरम विना लहे कैसे, तत्त्व वात पहिचाने रे ॥जि० अरज०॥३॥ मन वनमांहि चेतन भमता, समकितकु नहि पायो; गिल्गिचोया जिम गुडता गुडता, भवके नरभव आयो रे ॥जि० अरज० ॥४॥ समरथ साहिब जाण प्रभुजी, तुम दरसन मन भायो, सुगति नगरकी डीगरी दीजे, अवीरचद्रगुण गायो रे ॥ जि० अरज० ॥ ५ ॥ इति ॥

पुण्यप्रकाश-स्तवन

(साधु-श्रावकने अतिम आराधना)

(दुहा)

सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीसे जिनराय; सद्गुरु स्वामिनी सरस्वती, प्रेमे प्रणमु पाय ॥१॥ त्रिभुवनपति त्रिशला तणो, नदन गुणगभीर; शासन नायक जग जयो, वर्धमान

वडवीर ॥२॥ एक दिन वीर जिणंदने, चरणे करी प्रणाम, भविक जीवना हित भणी, पूछे गौतम स्वाम ॥३॥ मुक्ति मारग आराधीए, कहो किण परे अरिहंत, सुधा सरस तव वचन रस, भाखे श्री भगवंत ॥४॥

॥ दश अधिकार ॥

१अतिचार आलोइए, २व्रत धरीए गुरु शाख, ३जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी लाख ॥५॥ ४विधि शु वळी वोसरावीए, पापस्थानक अढार, ५चार शरण नित्य अनुसरो, ६निंदो दुरित आचार. ॥६॥ ७शुभ करणी अनुमोदीए, ८भाव भलो मन आण, ९अणसण अवसर आदरी, १०नवपद जपो सुजाण ॥७॥ शुभ गति आराधन तणा, ए छे दश अधिकार, चित्त आणीने आदरो, जेम पामो भवपार ॥८॥

ढाळ १ ली

(कुमतीए छेटा कीदा रम्मा—ए देशी)

पहेलो आलोचना अधिकार

॥ ज्ञानाचार ॥

ज्ञान दरिसण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार; एह तणा इण भव परभवना, आलोइए अतिचार रे. प्राणी, ज्ञान भणो गुणखाणी, वीर वदे एम वाणी रे, प्राणी० ॥९॥ गुरु ओळवीए नहीं गुरु विनये, काळे धरी बहुमान, सूत्र अरथ

तदुभय करी झूषां, भणीए वही उपधान रे. प्राणी० ॥१०॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोकारवाली; तेह तणी कीधी आशातना, ज्ञानभक्ति न समाली रे. प्राणी० ॥११॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्यु जेह; आ भव परभव वळीरे भवोभव, मिच्छामिदुक्कड तेह रे, प्राणी० ॥१२॥

॥ दर्शनाचार ॥

जिनवचने शंका नवि कीजे, नवि परमत अभिलाख; साधु तणी निंदा परिहरजे, फळ संदेह म राख रे प्राणी, समकित ल्यो शुद्ध जाणी, वीर वदे एम वाणी रे. प्राणी० ॥१३॥ मूढपणु छंडो परशंसा, गुणवंतने आदरीए, सामीने धरमे करी थिरता, भक्ति प्रभावना करीए रे. प्राणी० ॥१४॥ संघ चैत्य प्रासाद तणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो; द्रव्य देवको जे विणसाड्यो, विणसता उवेख्यो रे प्राणी० ॥१५॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, समकित खंड्यु जेह; आ भव परभव वळीरे भवोभव, मिच्छामिदुक्कड तेहरे प्राणी० ॥१६॥

॥ चारित्राचार ॥

पंच समिति त्रण गुप्ति विराधी, आठे प्रवचन माय, साधु तणे धरमे परमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे. प्राणी, चारित्र ल्यो चित्त आणी, वीर वदे एम वाणी रे प्राणी० ॥१७॥ श्रावकने धर्मे सामायिक, पोसहमा मन वाळी; जे जयणा पूर्वक ए आठे, प्रवचन माय न पाळी रे. प्राणी० ॥१८॥ इत्यादिक

विपरीतपणाथी, चारित्र डॉल्यु जेह; आ भव परभव वळीरे भवोभव, मिच्छामि दुक्कड तेहरे. प्राणी० ॥१९॥

तपाचार अने वियाचार

बारे भेदे तप नवि कीधो, छते जोगे निज शक्ते, धर्मे मन बच काया वीरज, नवि फोरवीउ भगते रे. प्राणी० ॥२०॥ तप वीरज आचारज एणी परे, विविध विराध्यां जेह, आ भव परभव वळीरे भवोभव, मिच्छामि दुक्कड तेहरे प्राणी० ॥२१॥ वळीय विशेषे चारित्र केरा, अतिचार आलोइए, वीर जिणेसर वयण सुणीने, पाप मेल सवि धोइए रे. प्राणी० ॥२२॥

ढाळ २ जी

(पामी सुगुरु पसाय—ए देशी)

अहिंसाव्रत

पृथ्वी पाणी तेउ, वायु वनस्पति, ए पांचे थावर कह्या ए. ॥२३॥ करी करसण आरंभ, खेत्र जे खेडीया, कूवा तळाव खणावीया ए. ॥२४॥ घर आरंभ अनेक, टांकां भूइरा, मेडी माळ चणावीया ए. ॥२५॥ लींपण गुंपण काज, एणी परे परपरे, पृथ्वीकाय विराधीया ए ॥२६॥ धोयण नाहण पाणी, झीलण अपकाय, छोती धोती करी दुहव्या ए.॥२७॥ भाठीगर कुंभार, लोह सोवनगरा, भाडभुंजा लीहा लागरा ए.॥२८॥ तापण शेकण काज, वस्त्र निखारण, रंगण रांधण रसवती ए.॥२९॥एणी परे

कर्मादान, परे परे केवली, तेउ वाउ विराधीया ए ॥३०॥ वाडी वन आराम, वावी वनस्पति, पान फूल फळ चुटीया ए ॥३१॥ पुहक पापडी शाक, शेकया सुकव्या, छेद्या छुद्या आथीया ए. ॥३२॥ अळशी ने एरडा घाणी घालीने, घणा तिलादिक पीलीया ए.॥३३॥ घाली कोलु माहे, पीली शेलडी, कदमूळ फळ वेचीयां ए ॥३४॥ एम एकेंद्री जीव, हण्या हणावीया, हणता जे अनुमोदीया ए ॥३५॥ आ भव परभव जेह,, वळीय भवोभवे, ते मुज मिच्छामि दुकड ए ॥३६॥ क्रमी सरमीया कीडा, गाडर गडोला, इयळ पुराने अळशीया ए ॥३७॥ वाळा जळो चुडेल, विचलित रस तणा, वळी अथाणा प्रमुखना ए ॥३८॥ एम बे इद्री जीव, जे मे दुहव्या, ते मुज मिच्छामि दुक्ड ए ॥३९॥ उधेही जू लीख माकण मकोडा, चाचड कीडी कुथुआ ए ॥४०॥ गद्धहिआ धीमेल कानखजुरीआ, गींगोडा धनेरीया ए ॥४१॥ एम तेइद्री जीव, जे में दुहव्या, ते मुज मिच्छामिदुक्कड ए.॥४२॥ मांखी मच्छर डास, मसा पतगीया, कसारी कोलीयडा ए. ॥४३॥ ढींकुण वींछु तीड, भमरा भमरीयो, कुताबगाइ खडमाकडी ए ॥४४॥ एम चौरिंद्री जीव, जे में दुहव्या, ते मुज मिच्छामि दुकड ए ॥४५॥ जळमां नाखी जाळ, जळचर दुहव्या, वनमा मृग संतापीया ए ॥४६॥ पीडया पखी जीव, पाडी पाशमा, पोपट घाल्या पाजरे ए ॥४७॥ एम पचेन्द्रिय जीव, जे में दुहव्या, ते मुज मिच्छामि दुकड ए ॥४८॥

ढाळ ३ जी.

(वाणी वाणी हितकारीजी—ए देशी)

सत्य अने अस्तेय व्रत

क्रोध लोभ भय हासीथीजी, बोल्यां वचन असत्य; कुड करी धन पारकाजी, लीधा जेह अदत्तरे, जिनजी, मिच्छामि दुकड आज, तुम साखे महाराजरे, जिनजी, देइ सारु काजरे, जिनजी, मिच्छामि दुक्कड आज ॥४९॥

ब्रह्मचर्य अने संतोष व्रत

देव मनुष्य तिर्यंचनाजी, मैथुन सेव्या जेह; विषयारस लपटपणेजी, घणु विडंब्यो देहरे. जिनजी० ॥५०॥ परिग्रहनी ममता करीजी, भवे भवे मेली आथ; जे जिहा ते तिहा रहेजी, कोइ न आवे साथरे जिनजी० ॥५१॥

रात्रि भोजन व्रत

रयणी भोजन जे कर्याजी, कीधा भक्ष अभक्ष, रसना रसनी लालचेजी, पाप कर्या प्रत्यक्षरे ॥ जिनजी० ॥५२॥ व्रत लेइ विसारीयाजी, वळी भांग्या पच्चक्खाण, कपट हेतु किरिया करीजी, कीधा आप वखाणरे ॥ जिनजी० ॥ ॥ ५३ ॥ त्रण ढाळे आठे दुहेजी, आलोया अतिचार; शिवगति आराधन तणोजी, ए पहेलो अधिकार रे ॥ जिनजी० ॥ ५४ ॥

ढाळ ४ थी.

(साहेलडीजी–ए देशी)

बीजो व्रत अधिकार

पच महाव्रत आदरी, साहेलडी रे, अथवा ल्यो व्रत बार तो, यथाशक्ति व्रत आदरी सा०, पाळो निरतिचार तो ॥५५॥ व्रत लीधां संभारीए सा०, हैडे धरीए विचार तो, शिवगति आराधन तणो सा०, ए बीजो अधिकार तो ॥ ५६ ॥

त्रीजो क्षमापन अधिकार

जीव सर्वे खमावीए सा०, योनि चोराशी लाख तो, मन शुद्धे करी खामणा सा०, कोइशु रोष न राख तो ॥५७॥ सर्व मित्र करी चिंतवो सा०, कोइ न जाणे शत्रु तो; रागद्वेष एम परिहरि सा०, कीजें जन्म पवित्र तो ॥ ५८ ॥ सामी संघ खमावीए सा०, जे उपनी अप्रीति तो; सज्जन कुटुंब करी खामणा सा०, ए जिनशासन रीति तो ॥५९॥ खमीए ने खमावीए सा०, एहज धर्मनो सार तो, शिवगति आराधन तणो सा०, ए त्रीजो अधिकार तो ॥ ६० ॥

चोथो पापस्थान परिहार अधिकार.

[२]मृषावाद [१]हिंसा [३]चोरी सा०, [५]धनमूर्छा [४]मैथुन तो, [६]क्रोध [७]मान [८]माया [९]तृष्णा सा०, [१०]प्रेम [११]द्वेष [१४]पैशुन्य तो ॥ ६१ ॥ [१६]निंदा [१२]कलह न कीजीए सा० कूडां [१३]न दीजे आळ तो, रति [१५]अरति [१७]मिथ्या तजो सा०, [१८]माया-

ए, एम अधिकरण अनेक तो, त्रिविध त्रिविध वोसरावीए प आणी हृदय विवेक तो ॥ ७१ ॥ दुष्कृत निंदा एम करी प पाप कर्या परिहार तो, शिवगति आराधन तणो ए छट्ठ अधिकार तो ॥ ७२ ॥

ढाळ ६ ठी.

(आवे तु जोयने जीवडा-ए देशी)

सातमो पुण्यानुमोदन अधिकार

धन धन ते दिन माहरो, जे में कीधो धर्म; दान शीयल तप भावना, टाल्या दुष्कृत कर्म ॥ धन० ॥ ७३ ॥ शेत्रुजा दिक तीर्थनी, जे में कीधी यात्रा; जुगते जिनवर पूजीया वळी पोष्या पात्र ॥ धन० ॥ ७४ ॥ पुस्तक ज्ञान लखावीया जिनहर जिन चैत्य, संघ चतुर्विध साचव्या, ए साते खे ॥धन०॥ ७५ ॥ पडिकमणां सुपरे कर्या, अनुकंपा दान, सा सूरि उवज्झायने, दीधां बहुमान ॥ धन० ॥ ७६ ॥ धर्मकार अनुमोदीए, एम वारवार, शिवगति आराधन तणो, ए सातमे अधिकार ॥ धन० ॥ ७७ ॥

आठमो शुभ भाव अधिकार

भाव भलो मन आणीए, चित्त आणी ठाम, समत आवे भावीए, ए आतमराम ॥ धन० ॥ ७८ ॥ सुख दुःख कारण जीवने, कोइ अवर न होय, कर्म खपे जे आचर्या भोगवीए सोय ॥ धन० ॥ ७९ ॥ समता विण जे अनुसरे

ग्रही पुण्यनां काम, पार उतर छेव हवे तुं, करतां विचार ॥ घन० ॥ ८० ॥ भाव भली परे भावीए, ए जिन धर्मनो सार, शिवगति आराधन तणो, ए पहेलो अधिकार ॥ धन० ॥ ८१ ॥

ढाळ ७ मी.

(रैवतगिरि हुआ प्रभु ॥ ए देशी)

नवमो अणसण अधिकार.

हवे अवसर जाणी करी संलेखण सार, अणसण आदरीये पच्चखी चारे आहार, लालसा सवि मूकी छांडी ममता अंग, ए आतम खेले समता ज्ञान तरंग ॥ ८२ ॥ गति चारे कीधां आहार अनंत निःशंक, पण तृप्ति न पाम्यो जीव लालचीओ रंक, दुल्लहो ए वळी वळी अणसणनो परिणाम, एहथी पामीजे शिवपद सुरपद ठाम ॥ ८३ ॥ धन धन्नो शालिभद्र खंधो मेघकुमार, अणसण आराधी पाम्या भवनो पार, शिव मंदिर जाशे करी एक अवतार, आराधन केरो ए नवमो अधिकार ॥ ८४ ॥

दशमो नवकार ध्यान अधिकार.

दशमे अधिकारे महामंत्र नवकार, मनथी नवि मूको शिवसुख फल सहकार, ए जपतां जाये दुर्गति दोष विकार, सुपरे ए समरो चौद पूरवनो सार ॥ ८५ ॥ जन्मांतर जातां जो पामे नवकार, तो पातक गाळी

नवपद सरिखो मंत्र न को ससार, इहभव ने परभवे सुख-संपत्ति दातार ॥ ८६ ॥ ज्यु भील भीलडी राजा राणी थाय, नवपद महिमाथी राजसिंह महाराज, राणी रत्नावती बेहु पाम्या सुरभोग, एक भव पछी लेशे शिववधू संजोग ॥ ८७ ॥ श्रीमतीने ए वळी मंत्र फळ्यो ततकाल, फणीधर फीटीने प्रगट थइ फुलमाळ, शिवकुमरे जोगी सोवन पुरीशो कीध, एम एणे मंत्रे काज घणांना सिद्ध ॥ ८८ ॥ ए दश अधिकारे वीर जिणेसर भाख्यो, आराधन केरो विधि जेणे चित्तमांहि राख्यो, तेणे पाप पखाळी भवभय दूरे नाख्यो, जिन विनय करंता सुमति अमृतरस चाख्यो ॥ ८९ ॥

ढाळ ८ मी.

(नेमी भावी भावशुं—ए देशी)

वीर प्रभुने प्रार्थना

सिद्धारथ राय कुलतिलो ए, त्रिशला मात मल्हारतो; अवनीतल तमे अवतर्या ए, करवा अम उपकार ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ ९० ॥ में अपराध कर्या घणा ए, कहेता न लहु पार तो, तुम चरणे आव्या भणी ए, जो तारे तो तार ॥ जयो० ॥ ९१ ॥ आश करीने आवीयो ए, तुम चरणे महाराज तो, आव्याने उवेखशो ए, तो केम रहेशे लाज ॥ जयो० ॥ ९२ ॥ करम अलुजण आकरा ए, जन्म मरण जंजाल तो; हुं छुं एहथी उभगो ए, छोडवो देव दयाळ ॥ जयो० ॥ ९३ ॥

आज मनोरथ मुज फल्या ए, नाठां दु:ख ददोल तो, तूठो जिन चोवीसमो ए, प्रगट्यां पुन्य कल्लोल ॥ जयो० ॥ ९४ ॥ भवे भवे विनय तुमारडो ए, भाव भक्ति तुम पाय सो, देव दया करी दीजीए ए, बोधी बीज सुपसाय ॥ जयो० ॥ ९५ ॥

(कलश).

इह तरण तारण सुगति कारण, दु:ख निवारण जग जयो, श्री वीरजिनवर चरण थुणता, अधिक मन उलट थयो १

श्रीविजयदेव सूरींद पटधर, तीरथ जंगम इण जगे, तपगच्छपति श्रीविजय प्रभसूरि सूर तेजे झगमगे २

श्रीहीरविजयसूरि शिष्यवाचक, कीर्तिविजय सुरगुरु समो; तस शिष्य वाचक विनय विजये, थुण्यो जिन चोवीसमो ३

सय सत्तर संवत ओगणत्रीसे, रही रांदेर चोमासए, विजय दशमी विजय कारण, कीयो गुण अभ्यासए, ४

नरभव आराधन सिद्धि साधन, सुकृत लील विलास ए; निर्जरा हेते स्तवन रचीयु, नामे पुण्य प्रकाश ए. ५

(पुण्यप्रकाश स्तवन समाप्त)

जिनेश्वरनु स्तवन (भावना)

नाथ ! मने निर्बल जाणी निभावो, तुम पर दीन दासनो दावो ॥ नाथ० ॥ १ ॥ भवसागरमां वेपारनो मर्कु, शोध्यो जडे नहि आरो, आभमां काळां वादळां चमकया, ...

किनारो ? ॥ नाथ० ॥ ॥ २ ॥ डगमग डगमग डोलती नैया, गुरु ! हलेसां मारो, सकटमा मने शरणु तमारु, ससार पार उतारो ॥ नाथ० ॥३॥ मदमतिनो हु फाइ न समज्यो, देहथी नेह वधार्यो, स्नेही सवधी सगाव्हालामा, तुजने छेक विसार्यो ॥ नाथ० ॥४॥ सूरज चादो तेजथी छलके, एक किरण दरशावो, दिलमा उछळे सिंधु दयानो, एक बिंदु वरसावो ॥ नाथ० ॥ ॥ ५ ॥ दरीशन आपो दीन दयाळु प्रभु, विद्याचद्र विनवे ओथ विनानो, दीन दयाळ शरणागत वत्सल, मेरु पथ भूल्यानो ॥ नाथ० ॥ ६ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तवन ॥

(मीठा लाग्या छे-ए देशी)

नीरखी श्री पार्श्वतणी, मूरति मन मोहनी, आत्म थयो उजमाळ रे, जिनराज मुजने समारजो, कृपानिधि भवने हठावजो ॥ १ ॥ मुगुट कुडल दाय, दीपे रळीआमणा, कठे हीरा तणा हार रे ॥ जिन० कृपा० ॥ २ ॥ समये समये प्रभु, स्मरण कर्ता, आनद प्रगटे अपार रे ॥ जिन० ॥ ३ ॥ प्रशम रसे प्रभु, ध्यान लगायो, करुणा रसे गरकाव रे ॥ जिन० ॥ ४ ॥ देदार देखी प्रभु, निरागी निर्मोही, भव्यो थया भवपार रे ॥ जिन० ॥ ५ ॥ सूरि सागरचद्र, शिष्य वृद्धिचद्र, नमे प्रभुने वारवार रे ॥६॥ जिन० कृपानिधि० ७